चकमक

सितंबर, 1993 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 5.00

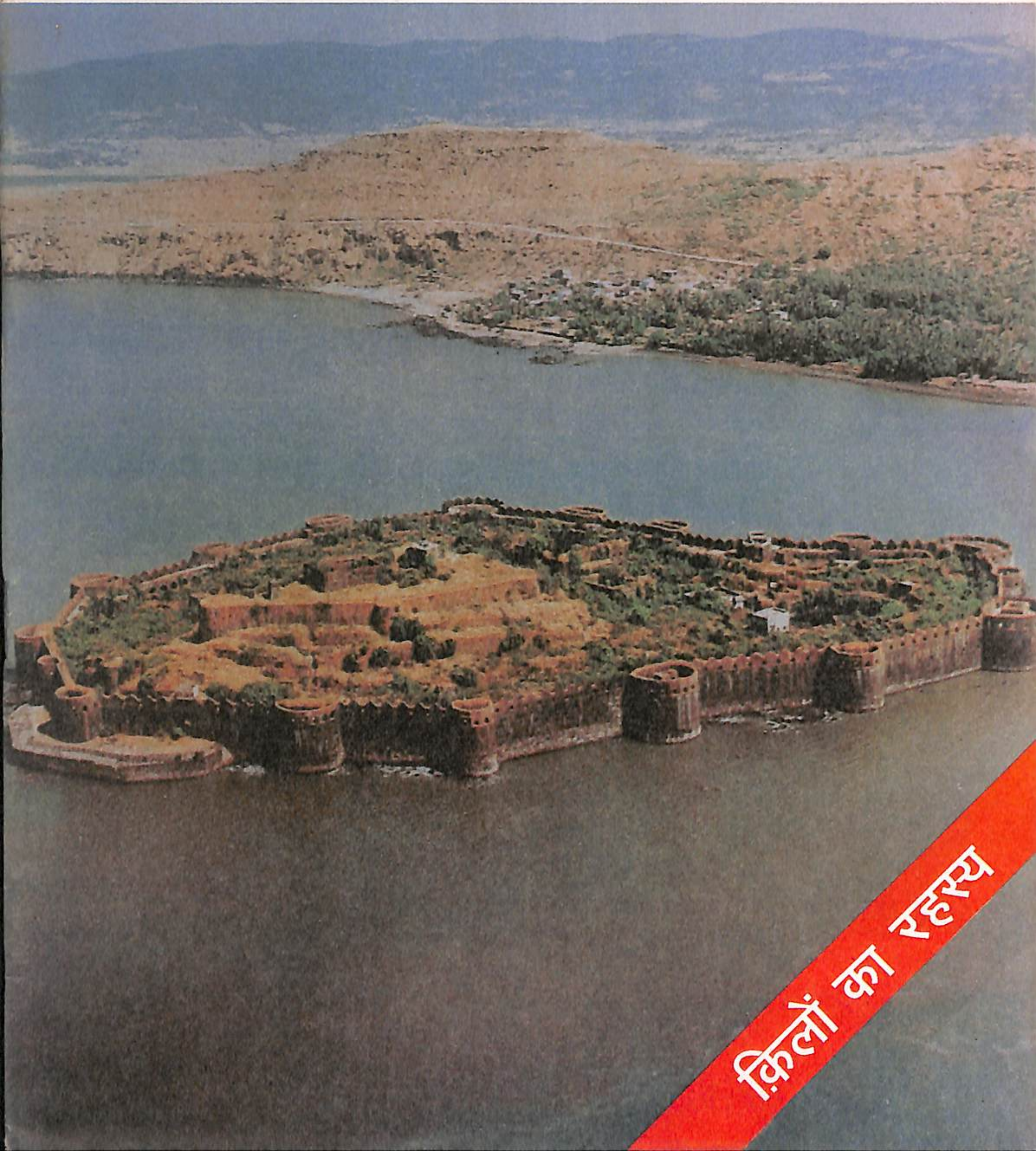

ग्वालियर का क़िला

जैसलमेर का क़िला

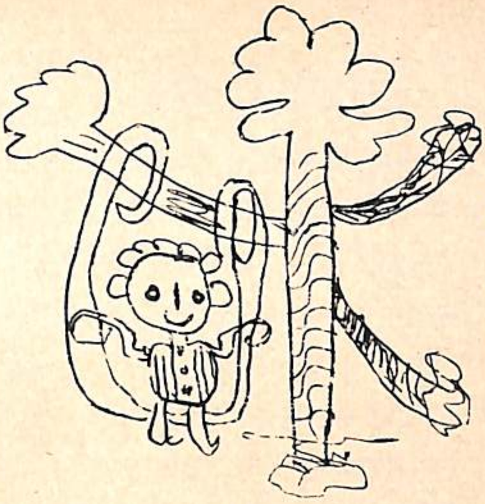

तोषण शर्मा, छठवीं, गिधपुरी, रायपुर

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-9 अंक-3 सितंबर, 1993

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक ख़र्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/208,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फ़ोन : 563380

इस अंक में....

विशेष

7 ❑ क़िलों का रहस्य

कहानी

25 ❑ तीन झूठ और हर झूठ में चालीस गप्पें

कविताएं

6 ❑ बूझो... बूझो
22 ❑ ऋतुओं का स्कूल

धारावाहिक

37 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना?-3

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना
32 ❑ खेल-पहेली
33 ❑ हमारे वृक्ष-19 : जामुन
34 ❑ माथा-पच्ची
36 ❑ चित्रकथा : बिंदु

और यह भी

24 ❑ खेल खेल में
31 ❑ सवालीराम

आवरण पर
जंजीरा का जलदुर्ग। विवरण पृष्ठ 20 पर।
छायाचित्र : 'द मैरिटाईम हेरिटेज़ ऑफ इंडिया' से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरा पन्ना

सपने में शेर

वन में एक वृक्ष के नीचे।
बैठा था मैं अंखियां मीचे।
जानवरों के भय ने लिया घेर।
संयोग से आया एक शेर।
मैंने उसे देखा तो घबरा गया।
मौत का अंधेरा मेरे सिर पर छा गया।
नैन हुए चार दिल घबराया।
मेरी ओर देख शेर गुर्राया।
थोड़ा साहस जुटा मैं तेज़ी से दौड़ा।
शेर ने पैरों को मेरी ओर मोड़ा।
ज्यों तेज़ी से शेर भागा
मैं गहरी नींद से जागा।
ज़ोरों से धड़क रहा था सीना।
बदन पर हावी था पसीना।
देखा था मैंने सपना एक भयानक।
क्या होता नींद न खुलती अचानक।

❑ चम्पालाल कुशवाहा, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

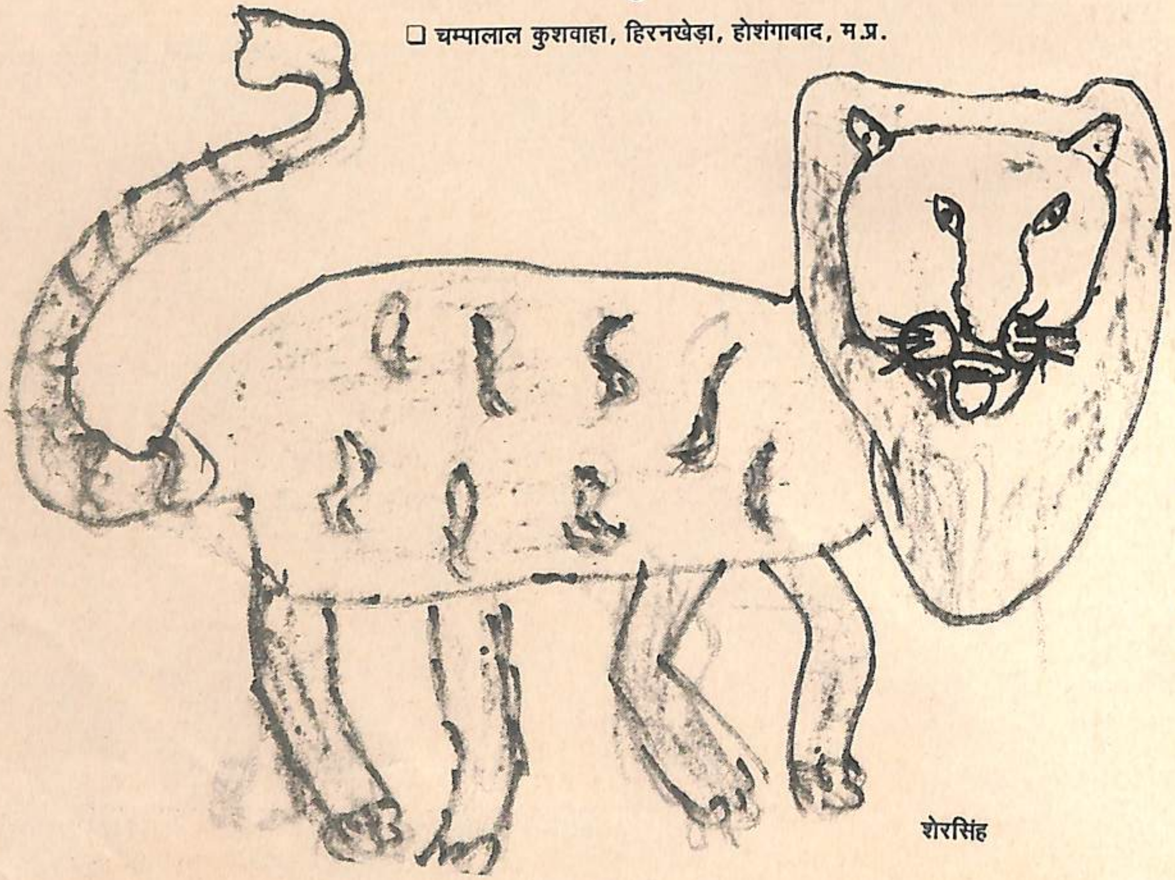

शेरसिंह

स्कूटर की आवाज़

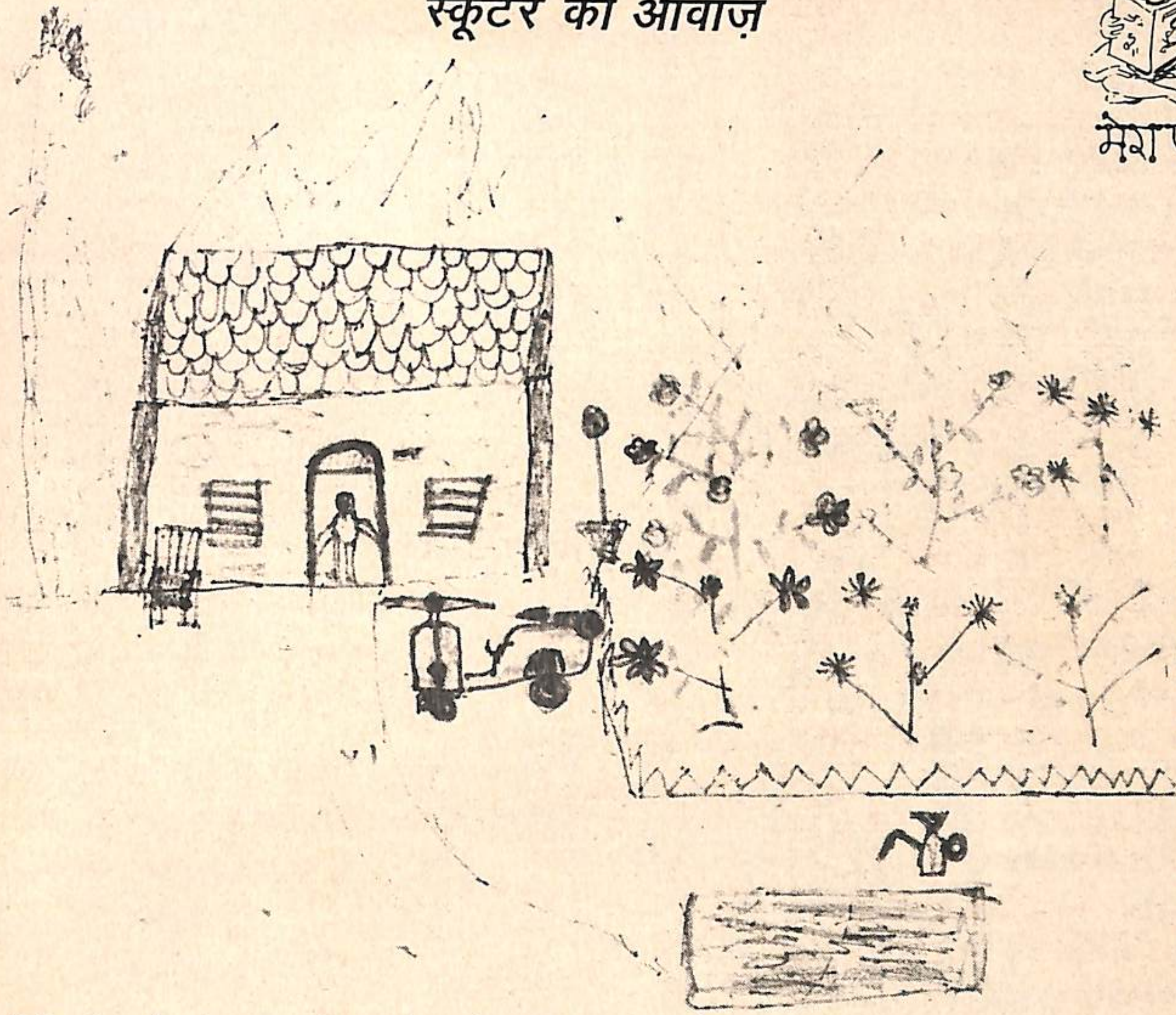

आनन्द कुमार टेमरे, चौथी, खेड़ीपुरा, हरदा, म.प्र.

दीदी की नई-नई शादी हुई थी, मैं उनके घर गई। जीजा जी ने मुझसे कहा, "चलो कीर्ति हम तुम्हें घुमा-फिराकर लाते हैं, तुम जल्दी से तैयार हो जाओ।"

मैं तैयार होकर बाहर आई। उन्होंने अपना स्कूटर स्टार्ट किया और कहा, "कीर्ति तुम बैठ गईं।"

मुझे स्कूटर की आवाज़ में सुनाई नहीं पड़ा, मैंने जवाब नहीं दिया। जीजा जी समझे कि मैं बैठ गई और उन्होंने स्कूटर चलाया और चले गए। मैंने उनको बहुत आवाज़ दी लेकिन उन्हें स्कूटर की आवाज़ में कुछ सुनाई नहीं दिया।

मैं समझी कि जीजा जी का शायद मूड बदल गया और मैं अंदर चली गई। जीजा जी यह समझते रहे कि मैं स्कूटर पर बैठी हूं किंतु जब उन्होंने मुड़कर देखा तो मैं नहीं दिखी। जीजा जी ने सोचा मैं कहीं गिर गई हूं इसलिए वो जगह-जगह देखते हुए घर आए। मैं उन्हें बाहर ही खेलती दिखी तो मेरे पास आए और बोले, "तुम कहां थीं?"

मैंने उन्हें सब बताया, सुनकर उन्हें हंसी आई। मुझे भी जब यह बात याद आती है तो बहुत हंसी आती है।

❑ कीर्ति दुबे, ग्यारहवीं, खातेगांव, देवास, म. प्र.

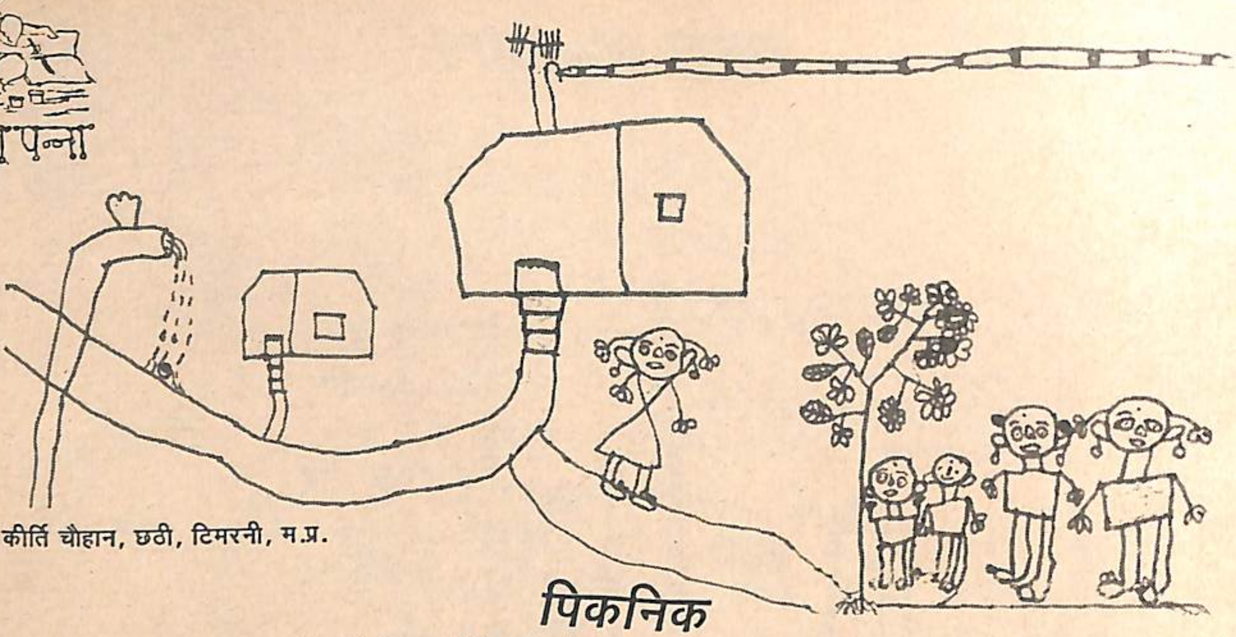

कीर्ति चौहान, छठी, टिमरनी, म.प्र.

पिकनिक

एक दिन की बात है, मेरी सहेलियों ने पिकनिक जाने का प्रोग्राम बनाया जो हमें पसंद आया। लेकिन मुसीबत थी घर में क्या कहकर जाएं, पिकनिक मम्मी भेजेंगी नहीं। मेरी नानी भी इसी शहर में रहती हैं। मैंने मम्मी से कहा, "आज मैं नानी के घर जा रही हूं।"

और हम सभी इसी तरह अपनी मम्मियों से कुछ-न-कुछ कहकर चले गए पिकनिक मनाने और शाम को घर लौट आए। कुछ दिन बाद मम्मी नानी के घर गईं तो नानी ने कहा, "सुरभि क्यों नहीं आई। वो तो आती ही नहीं, काफ़ी दिन हो गए।"

मम्मी बोली, "अभी तीन-चार दिन पहले तो आई थी ना?"

नानी बोली, "नहीं।"

घर आकर मम्मी ने मुझसे पूछा, "उस दिन नानी के घर का कहकर कहां गई थी?"

मैं डर गई और मैंने सब कुछ बता दिया। मैंने सोचा आज तो पिटाई होगी मगर उल्टा हुआ। मम्मी ने मुझे पास बुलाकर कहा,, "इस तरह झूठ नहीं बोलते। अभी तुम छोटी हो, बड़ी हो जाओ तब अकेले पिकनिक पर जाना। जाओ खेलो।"

❑ सुरभि माहेश्वरी, जोधपुर, राजस्थान

पोस्टकार्ड

पोस्टकार्ड
नाम हमारा।
खबरें लाना
काम हमारा।
हम बड़ी दूर से
आते जाते।
लोगों की हैं खबरे लाते।
हम थकते नहीं
हम हारते नहीं।
हम अपने मुंह से
पुकारते नहीं।
हमें लिखने वाले
लिख देते हैं।
पढ़ने वाले
पढ़ लेते हैं।
हम आते जाते
अपने ही रस्ते।

❑ दलजीत सिंह, गढ़ीबारोद, शिवपुरी, म.प्र.

बकरी के बच्चे

एक बकरी थी। उसका नाम अनीता था। उसके दो छोटे-छोटे बच्चे थे। एक का नाम बुलबुल था और दूसरे का खुशबू था। एक दिन वे खेलकर आए और मां से बोले, 'मां हमें दूध दे दो।'

मां जैसे ही दूध पिलाने लगी, वैसे ही वहां शेर आता दिखाई दिया। तीनों भागे। शेर भी पीछे-पीछे भागा। बकरी को एक घर दिखाई दिया। तीनों सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए। शेर बाहर ही रह गया।

खुशबू और बुलबुल बहुत उछल-कूद करने लगे। बकरी ने उन्हें डांटा, तो भी वे नहीं माने। ऊपर पेटी रखी थी। पेटी बड़ी और भारी थी। उनकी उछल-कूद से पेटी नीचे गिरी और सीधे शेर को लगी। शेर मर गया। अनीता ने बच्चों को बहुत प्यार किया और सब खुशी-खुशी रहने लगे।

❑ शानू हर्ष, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

मैं कौन हूं

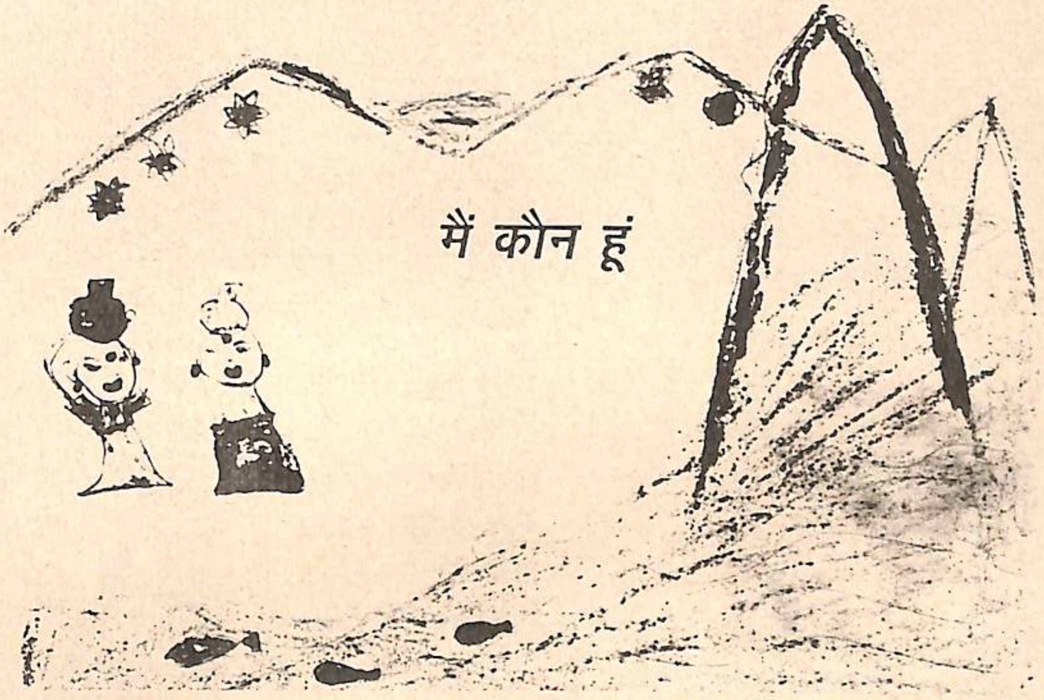

अरुणा गायकवाड़, सातवीं, भोपाल

मैं पगडंडी पर नहीं चलती, सड़कों पर नहीं चलती। बने बनाए रास्ते मुझे नहीं भाते। कितनी भी कठिनाईयां क्यों न आएं मैं अपना मार्ग बना लेती हूं। मैं पहाड़ों की बेटी हूं। मैं सुनसान जगह में शोर मचाती हूं। ऊंचे-नीचे स्थानों पर नटखट लड़की की तरह उछलती-कूदती हूं। बताओ मैं कौन हूं?

नहीं बता सकते, तो और सुनो। मैदानों में धीरे-धीरे चलना मुझे अच्छा लगता है। मेरे कई नाम हैं। जहां मैं चलती हूं वहां की भूमि हरी-भरी हो जाती है। फसलें लहलहाने लगती हैं। वृक्ष फलों से लद जाते हैं। सबको मैं अमृत जैसा मीठा जल पिलाती हूं। पानी के बिना मैं सुंदर नहीं लगती। अब तो तुम जान ही गए होगे कि मैं कौन हूं। मैं सदा चलने के गीत गाती हूं। मैं सबकी सेवा करती हूं पर बदले में मैं कुछ नहीं मांगती। बताओ मैं कौन हूं? यदि अब भी तुम नहीं बता सकते तो मैं बताती हूं। मेरा नाम है नदी।

❑ सुनील कुमार चौधरी, दसवीं, देसूरी, पाली, राजस्थान

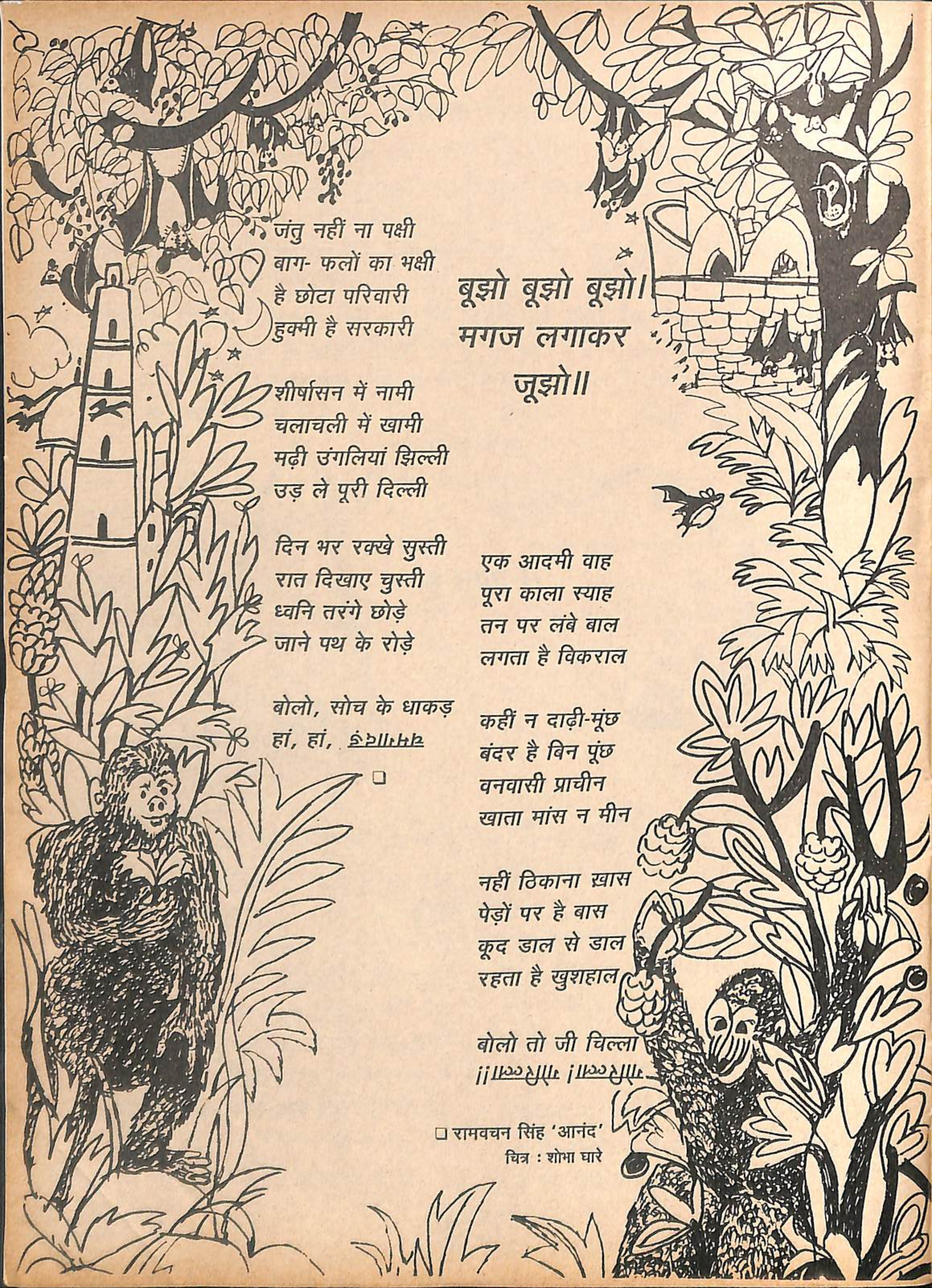

बूझो बूझो बूझो। मगज लगाकर जूझो॥

जंतु नहीं ना पक्षी
बाग- फलों का भक्षी
है छोटा परिवारी
हुक्मी है सरकारी

शीर्षासन में नामी
चलाचली में खामी
मढ़ी उंगलियां झिल्ली
उड़ ले पूरी दिल्ली

दिन भर रक्खे सुस्ती
रात दिखाए चुस्ती
ध्वनि तरंगे छोड़े
जाने पथ के रोड़े

बोलो, सोच के धाकड़
हां, हां, चमगादड़

❑

एक आदमी वाह
पूरा काला स्याह
तन पर लंबे बाल
लगता है विकराल

कहीं न दाढ़ी-मूंछ
बंदर है बिन पूंछ
वनवासी प्राचीन
खाता मांस न मीन

नहीं ठिकाना ख़ास
पेड़ों पर है बास
कूद डाल से डाल
रहता है खुशहाल

बोलो तो जी चिल्ला
गुरिल्ला! गुरिल्ला!!

❑ रामवचन सिंह 'आनंद'
चित्र : शोभा घारे

क़िलों का रहस्य

पटियाला का गोल क़िला। चारों तरफ दोहरी दीवार और पानी की खाई साफ नज़र आती है।

जब चकमक के संपादक ने एक दिन मुझे क़िलों पर लेख लिखने को कहा तो मैं चक्कर में पड़ गया। क्या लिखूं? क्या करूं? इस विषय पर मैं ज़्यादा कुछ जानता भी नहीं था। हां, यह ज़रूर है कि बचपन से ही क़िलों, राजाओं और उनकी घमासान लड़ाइयों के प्रति एक आकर्षण-सा रहा है, मन में, एक रुझान... । इतिहास के पन्नों से किसी का नाम लेते ही प्राचीनकाल की शान-शौक़त, गौरव और महानता की महक छा जाती थी। (लेकिन आज, वयस्क अवस्था में, उन युगों की क्रूरता, तानाशाही और अत्याचार की बदबू भी!)

राजपूतों की वीरता की कथाओं से भरपूर राजस्थान का मरुस्थल ... चित्तौड़गढ़ और खूबसूरत रानी पद्मिनी... पृथ्वीराज चौहान ... रणथम्भोर, जैसलमेर, जोधपुर ... सीमावर्ती इलाका ... पटियाला ... दिल्ली और आगरा के लाल क़िले ... मध्य भारत के मालवा, बुंदेलखंड और बघेलखंड क्षेत्र ... ग्वालियर, ओरछा, झांसी और उसकी साहसिक रानी ... फिर दक्षिण की ओर ... बीजापुर, गोलकुंडा और श्रीरंगापट्टनम जहां टीपू सुल्तान ने अंग्रेज़ों का सामना किया ... वहां से विजयनगर साम्राज्य की महान राजधानी की तरफ, जिसका आज खंडहर ही साक्षी है, प्रतीक है ... तिरुचिरापल्ली का शानदार पथरीला किला जो पहाड़ की ऊंचाई पर स्थित है ... और फोर्ट विलियम व फोर्ट सेंट जॉर्ज, जहां से अंग्रेज़ों ने इस देश पर अपना रोब जमाया।

मुझे यक़ीन है कि तुममें से कई मेरी ही तरह क़िलों, राजाओं व प्राचीन इमारतों की कहानियों व मिथकों से मंत्रमुग्ध होते रहे होंगे। मैं तो इतिहास की कक्षा में सपनों की दुनिया में खोया रहता था। एक तरफ टीचर सिकंदर और अकबर या अशोक के पाठ पढ़ा रहे होते और वहां मैं ख़्यालों में तलवार लिए शत्रुओं पर हमला बोल रहा होता। स्कूल के पुस्तकालय में भी घंटों प्राचीन इमारतों के रंगीन चित्रों को देखता रहता था, मैं।

बचपन की यादें तो मिटती जाती हैं, बदलती जाती हैं, जैसे-जैसे हम कुछ नया सीखते हैं। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। शिवाजी की कहानियां अभी भी याद आती हैं मुझे, जो मेरे टीचर ने क्लास में सुनाई थीं। शिवाजी तो मेरे बचपन का हीरो था। उसके बारे में एक ऐसी कहानी भी सुनी, जिस पर विश्वास करना ही मुश्किल था। कहा जाता है कि शिवाजी और उसके सैनिक बड़े से बड़े क़िलों की ऊंची से ऊंची दीवारों पर चढ़कर शत्रुओं पर हमला करते थे। चढ़ने में वे गोहेटा नाम की एक बड़ी छिपकली की मदद लेते थे। गोहेटा की पूंछ पर रस्सी बांधकर उसे दीवार पर फेंकते जहां वह अपने पैरों के सहारे मज़बूती से चिपक जाती थी। फिर रस्सी के सहारे सैनिक दीवार को लांघते थे। वाह! क्या बात! किसी दंत कथा से कम नहीं!

पर उस छोटी-सी उम्र में भी मुझे यक़ीन नहीं आता था कि एक छोटा-सा जानवर एक सशस्त्र वयस्क का वज़न संभाले हुए दीवार पर चिपका रह सकता है! जब मैं बड़ा हुआ तो मैंने अपने एक इतिहासकार दोस्त से पूछा कि क्या ऐसा संभव है? क्या यह कहानी सच हो सकती है? अब इतिहासकार तो इतिहासकार ही रहेगा। उसने सीधा जवाब नहीं दिया, बल्कि अपना टेप चालू कर दिया कि इतिहास की घटनाओं को सत्यापित करना मुश्किल काम है, क्योंकि इतिहास के पन्नों में, हज़ारों प्रमाण मौजूद हैं - दस्तावेजों में, ग्रंथों में, मिथकों में, कथाओं में, नाटकों में इमारतों में, संस्कृति में - पर सच क्या है और झूठ क्या, यह तय करना आसान नहीं है, क्योंकि कई प्रमाण विरोधाभासी भी होते हैं।

ख़ैर। पर एक बात की पुष्टि तो हो ही गई, वह थी कि गोहेटा एक बार कहीं पकड़ लेता है तो एकदम चिपक जाता है। मैं इस बात का दावा कर सकता हूं क्योंकि एक दिन मैंने बिल में घुसते एक गोहटा की पूंछ को पकड़ लिया था और उसे बाहर खींचने की कोशिश भी की थी। मेरे दोस्त ने मेरी कमर पकड़ी और फिर हम दोनों ने दम लगाया, पर वह गोहेटा एक इंच भी नहीं हिला। क्या ताक़त थी उसकी! और वह डेढ़ फुट से ज़्यादा लंबा तो था ही नहीं।

हां, मैंने शिवाजी के बारे में और बहुत कुछ भी जाना, जिसकी वजह से उसके बारे में मेरे ख़्यालों में बदलाव भी आया। पर बचपन की वे यादें अभी भी मंडराती रहती हैं दिमाग़ में। और जहां तक क़िलों का सवाल है - शिवाजी ने अपने साम्राज्य में सौ से अधिक क़िलों पर कब्ज़ा किया या निर्माण किया। इनमें से कई तो आज भी सह्याद्री पर्वतों व पश्चिमी घाट पर दिखते हैं - सिंहगढ़, रायगढ़, राजगढ़ . .।

अब चलो, एक दूसरा उदाहरण देखें, यूरोप के इतिहास से - 'क्रूसेड' नाम का वह धर्म-युद्ध जो ईसाइयों ने मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ा था। ईसाइयों के धार्मिक मुखिया-पोप ने फिलस्तीन की पवित्र भूमि को नास्तिकों के कब्ज़े से मुक्त करने का आव्हान दिया था। यह थी ग्यारहवीं शताब्दी की बात। उसके बाद अगले तीन सौ साल में ऐसे दस धर्म युद्ध या क्रूसेड लड़े गए। यूरोप के कई राजा अपनी सेनाओं को लेकर पूर्व की ओर निकले। इनमें एक था रिचर्ड जिसे सिंह हृदय के नाम से पुकारा जाता था। बचपन में मेरी आंखों में आंसू भर आते थे जब भी मैं रिचर्ड की मुसीबतों के बारे

झांसी का मशहूर क़िला।

में पढ़ता, खासकर उसके धोखेबाज़ भांजे जॉन की बेईमानी के बारे में, जिसने उसकी ग़ैरहाज़िरी में उसके सिंहासन पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। मैं उन मुसलमानों से भी नफ़रत करता था जिनके ख़िलाफ रिचर्ड फिलस्तीन में लड़ने गया।

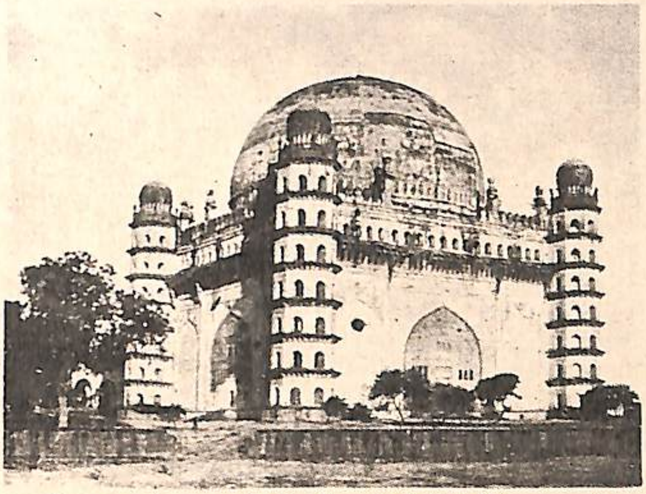

बीजापुर का गोल गुंबद जो दुनिया के सबसे बड़े गुंबदों में गिना जाता है।

पर जब मैं बड़ा हुआ तो मालूम पड़ा कि मैं इतिहास की वो किताबें पढ़ रहा था जो यूरोपीय लोगों ने ख़ुद के बारे में लिखी थीं। स्वाभाविक ही था कि इस इतिहास के नायक यूरोपीय लोग ही होंगे और खलनायक मुसलमान व अरबी लोग। मुझे पता चला कि अरब लोग असभ्य और नास्तिक नहीं थे जैसा कि उन किताबों में लिखा था। उनका अपना धर्म था, जिसका वे कर्मनिष्ठा से पालन करते थे। और वे अनपढ़ नहीं, बल्कि विद्वान थे। उनकी संस्कृति में वैज्ञानिक चिंतन व खोज की पुरानी परंपरा थी। क्रूसेडों (या मुसलमानों की भाषा में जिहाद) के माध्यम से उनकी यह संस्कृति व ज्ञान पश्चिमी देशों में भी पहुंचा। और इसी की नींव पर वहां सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैज्ञानिक क्रांति हुई।

जहां तक क़िलों का सवाल है, यूरोपीय शासकों ने यूरोप से फिलस्तीन के मार्ग पर सैंकड़ों क़िलों का निर्माण किया। इन क़िलों की बनावट में अरबी वास्तुकला की साफ झलक दिखती है। यहां तक कि यूरोपीय क़िलों में कुछ मूलभूत परिवर्तन हुए- उनमें अब एक से अधिक दीवारें बनने लगीं ,जैसी कि प्राचीन मध्य एशिया में पाई जाती हैं। विभिन्न संस्कृतियों के इस आदान-प्रदान व सम्मिश्रण से ही इतिहास बनता है और मानव सभ्यता की प्रगति होती है।

अब चलो अमरीकी महाद्वीप की ओर। पांच सौ साल पहले, यूरोप के लोग इस महाद्वीप में प्रवास करने लगे। वे जहाज़ों से महाद्वीप के पूर्वी तट पर उतरकर बैलगाड़ियों के कारवांओं से मध्य व पश्चिम के मैदानी इलाक़े में बसने निकलते थे। रास्ते में उन्हें वहां बसे रेड इंडियनों (वहां के आदिवासी) का मुक़ाबला करना पड़ता था। अंग्रेज़, फ्रांसीसी, स्पेनी व बाद में अमरीकी सैनिकों ने रेड इंडियनों से लड़ने हेतु सैंकड़ों लकड़ी के क़िले बनाए। बाद में अमरीकी गृह युद्ध के दौरान भी नए-नए क़िले बनाए गए जिनके नाम आज भी मशहूर हैं - फोर्ट वर्थ, फोर्ट समटर आदि।

मैं हमेशा इन प्रवासी लोगों का पक्ष लेता था और मन में रेड इंडियनों को ख़ूब कोसता था। पर जब मैं बड़ा हुआ तो मेरे सारे विचार बदल गए। तब मुझे समझ में आया कि यह भूमि इन आदिवासियों की ही थी और प्रवासियों ने लड़-झगड़कर, धोखेबाज़ी से इस ज़मीन को रेड इंडियनों से छीनकर उन्हें छोटी-छोटी कॉलोनियों में बसा दिया था। रेड इंडियन असभ्य और जंगली नहीं थे बल्कि उनकी अपनी संस्कृति और अपना ज्ञान था जिसे गोरे लोग समझने में असमर्थ थे। ठीक वैसे ही जैसे आज मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र व गुजरात के आदिवासियों के साथ हो रहा है। पढ़े-लिखे लोग उन्हें पिछड़े व असभ्य कहते हैं। विकास के नाम पर उनसे उनकी ज़मीन छीनकर उन्हें बेघर कर रहे हैं। जैसे नर्मदा घाटी बांध परियोजना के संदर्भ में हो रहा है। इन बांधों से किसका विकास होने वाला है? किसी भी क़ीमत पर आदिवासियों का विकास तो होगा ही नहीं। अब चलो यूनान के इतिहास में। क़िस्सा है पैरिस नाम के एक राजकुमार (ट्रॉय के राजा का बेटा) और हेलेन नाम की रानी का। हेलेन एक यूनानी राजा की बीबी थी। पैरिस ने हेलेन का अपहरण कर लिया

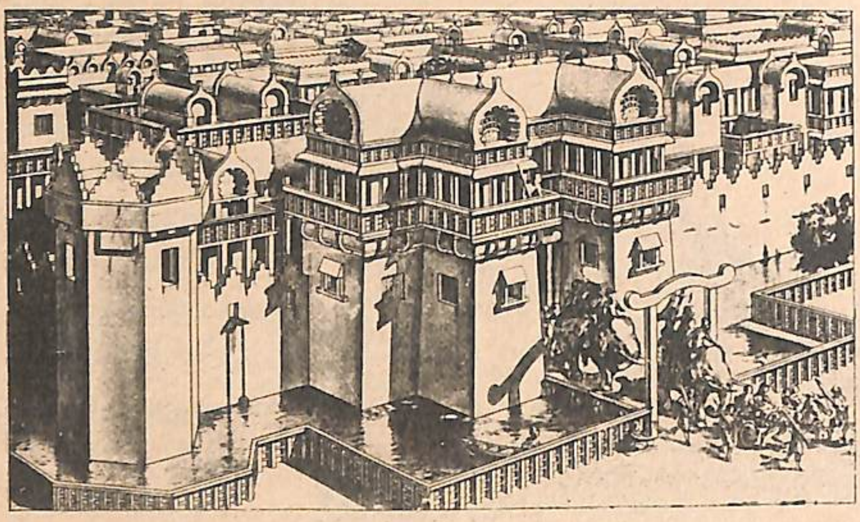

आज से लगभग ढाई हज़ार साल पहले मौर्य साम्राज्य के अनेकों शहर पाटलीपुत्र, कुशीनगर आदि दीवारों से घिरे या किलाबंद शहर थे। पाटलीपुत्र का विस्तृत वर्णन मेगास्थीनीस नामक एक यूनानी दूत के लेखों में मिलता है जो लगभग 2300 साल पहले चंद्रगुप्त मौर्य के शासन काल में भारत आया था। लेकिन कुशीनगर और उस जैसे अन्य मौर्यकालीन शहरों की जानकारी एक अन्य स्रोत से भी मिलती है। यह स्रोत है सांची के ऐतिहासिक स्तूपों के द्वार। इन द्वारों पर प्राचीन शहरों एवं युद्धों को नक्काशी के ज़रिए चित्रित किया गया है। यहां दिया चित्र कुशीनगर (वर्तमान में मगध, बिहार) का है। इसमें शहर का मुख्य द्वार, बुर्ज तथा पानी से भरी खाई दिखाई दे रही है।

था, इस वजह से नाराज़ होकर यूनानी राजाओं ने ट्रॉय पर हमला बोल दिया। पर ट्रॉय एक क़िलाबंद शहर था, जिस पर कब्ज़ा करना मुश्किल था। दस साल तक क़िले की घेराबंदी के बाद भी जीत की जब कोई संभावना नहीं दिखी, तब एक यूनानी राजा को एक युक्ति सूझी। उसने लकड़ी का एक भीमकाय घोड़ा बनवाया और क़िले के दरवाज़े के सामने खड़ा कर दिया। ट्रॉयवासियों ने उसे हार का प्रतीक समझकर क़िले के अंदर खींच लिया। रात को घोड़े के अंदर छुपे यूनानी सैनिकों ने बाहर निकलकर क़िले के दरवाज़े खोल दिए। यूनानी सेना नें तुरंत क़िले में घुसकर उसे जीत लिया।

इतिहास तो अलग दिखने लगता है जैसे-जैसे हम बीते काल के बारे में और अधिक जानने लगते हैं। इतिहास लोगों के नज़रिए या दृष्टिकोण की वजह से भी बदलता है, अलग दिखता है। आख़िर हम 135 साल पहले लड़े गए जिस युद्ध को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं, उसी युद्ध को अंग्रेज़ इतिहासकार सिपाहियों का विद्रोह कहते हैं। दुनिया के

इतिहास का एक बड़ा हिस्सा क़िलों के खंडहरों में लिखा है। और ऐसे हज़ारों क़िले हैं दुनिया के कोने-कोने में। राजा- महाराजा एक दूसरों से लड़ते रहे हैं, अपने राज्यों की सीमाएं आगे बढ़ाने के लिए। और इन सीमाओं की सुरक्षा हेतु वे क़िले बनाते थे।

मैंने ज़िंदगी में पहली बार क़िला तब देखा जब मैं बड़ा होकर मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले में नौकरी करने लगा था। एक दिन मैं बनखेड़ी नाम के कस्बे के पास के जंगलों में घूमने निकला। क़िला जंगल के बीचोबीच था, महुआखेड़ा नामक गांव के पास। वास्तव में वह क़िला कम, महल ज़्यादा लगता था। बाद में लोगों ने हमें बताया कि यह एक स्थानीय गोंड राजा का महल-क़िला था। अब तो खंडहर ही बचा था वहां। दीवारों के पत्थरों के बीच लताएं व झाड़ियां उग रही थीं। छत पर चढ़ने के लिए एक टूटी-फूटी सीढ़ी अभी भी बची थी। महल में एक बड़ा कमरा था जिसकी दीवारें चित्रों से भरी हुई थीं। शायद यह दीवान-ए-आम था एक ज़माने में, जहां राजा अपनी प्रजा से मिलता था। या फिर यह नाच कक्ष भी हो सकता था।

बड़ा और संरक्षित क़िला देखने का मौक़ा तब मिला जब मैं दिल्ली गया वहां लाल क़िला देखा। सचमुच वह इतना बड़ा था कि मैं हैरान हो गया। ऊंची- ऊंची दीवारें, पचास-सौ फुट ऊंची, एक पांच मंज़िला मकान के बराबर। लाल पत्थर का बना है, यहक़िला। तभी उसका रंग लाल है। मुझे पूरा एक दिन लगा, उसको

देखने में। उसमें मस्जिद है और संग्रहालय भी। नवाब, बेगम व सिपाहियों के निवास स्थान आदि भी।

तब से आज तक मैंने कई और क़िले देखे, कुछ दूर से, कुछ नज़दीक से। एक क़िला देखा था मध्यप्रदेश के धार शहर में। ग्वालियर का क़िला रेल में सफ़र करते हुए देखा। राजस्थान में बूंदी का क़िला रात को बस में सफ़र करते समय देखा; बत्तियों से जगमगाता हुआ। क्या आलीशान दृश्य था वह।

जयपुर में मैंने आमेर के क़िले को देखा। पहाड़ पर स्थित यह क़िला बहुत ही बड़ा है। उसमें दीवान-ए-आम और दीवान-ए-ख़ास थे और ज़नानख़ाने के एक कमरे की दीवारें छोटे- छोटे आइनों से बनी हैं। मोमबत्ती जलाने पर उसके बिंब इन सैकड़ों आईनों में आकाश के तारों जैसे नाचते। बाहर के बगीचे में पानी के फौवारे भी थे।

जयगढ़ के क़िले में मैंने एक तोप देखी जो एशिया की सबसे बड़ी तोप मानी जाती है। उस तोप का नाम जयबान है। क़िले में तोप व बारूद के निर्माण हेतु एक तोपखाना भी था। क़िले में पानी की बड़ी- बड़ी टंकियां भी थीं। मंदिर और गांव भी, जहां सैनिक अपने परिवारों के साथ रहते थे। क़िले में एक संग्रहालय है जिसमें शस्त्रों व कपड़ों के नमूने रखे हैं।

प्राचीनकाल से अब तक के सैंकड़ों राजाओं ने शहरों की सुरक्षा हेतु क़िले और उनमें ऊंची-ऊंची दीवारें, बड़ी-बड़ी मीनारें व दरवाज़े आदि बनाए थे। ऐसी इमारतें आज भी कई शहरों में पाई जाती हैं। लेकिन इनमें से अधिकांश तो खंडहर ही हैं। पर कईयों को

वैदिक काल के गांव लकड़ी की बाड़ों से घिरे हुए होते थे। गांव में प्रवेश के लिए एक फाटक होता था। ये बाड़े मुख्य रूप से जंगली जानवरों से बचने के लिए बनाए जाते थे। लेकिन जल्दी ही बाड़े युद्ध आदि के समय सुरक्षा के साधन भी बन गए।

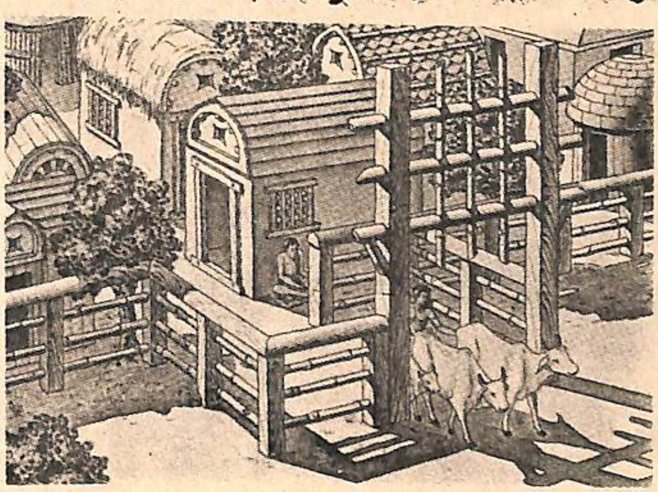

भारत के पुरातत्व विभाग ने संरक्षित किया है और पुनर्निर्मित भी। इस विभाग का एक मुख्य काम तो है ही- देश की ऐतिहासिक इमारतों को नष्ट होने से बचाना। मैंने भी ऐसे कई खंडहर देखे हैं - भोपाल, इंदौर, दिल्ली, पुणे आदि शहरों में। विभिन्न प्रकार की वास्तुकला। विभिन्न संस्कृतियों व धर्मों का प्रभाव। हिंदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई। यह सभी हमारी परंपराओं का हिस्सा हैं, राष्ट्रीय विरासत हैं। यह विरासत विभिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान और मिश्रण का ही नतीजा है।

तो चलो, अब हम अपने देश के क़िलों को देखने निकलें। मैंने तो पहले ही कहा था कि क़िलों के बारे में ज़्यादा नहीं जानता। इसलिए मैंने पुस्तकालय में इस विषय पर किताबें ढूंढीं। इत्तेफ़ाक से एक ऐसी किताब हाथ लगी जो कि चित्रों से भरपूर थी। किताब का नाम है "फोर्ट्स ऑफ़ इंडिया" यानी भारत के क़िले। फोटो खींचने वाली एक अंग्रेज़ महिला है जिसका नाम वर्जिनिया फास है। एक और किताब भी है - इनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका या ब्रिटेनिका विश्वकोश - जो कि संदर्भ ग्रंथ है। युद्ध की तकनीक नामक अध्याय में क़िलों की काफ़ी जानकारी उपलब्ध है, इसमें। सो आगे दी गई अधिकांश जानकारी और चित्र इन्हीं दो किताबों से हैं। तो चलो, क़िलों की सैर पर.

☐ रेक्स डी रोज़ारियो

क़िले : कब, क्यों, कैसे, कहां?

क़िले का पर्यायवाची दुर्ग है। और दुर्ग का मतलब होता है कोई ऐसी जगह जिस पर अतिक्रमण करना आसान नहीं है। एक प्राचीन विद्वान कौटिल्य ने अर्थशास्त्र नाम की अपनी किताब में छह क़िस्म के दुर्गों का ज़िक्र किया है। उसके अनुसार यह वर्गीकरण इस बात से तय होता है कि क़िला कहां स्थित है। ये छह क़िस्में हैं - मरुस्थली या दानव दुर्ग, मही या मिट्टी दुर्ग, वृक्ष या वन दुर्ग, जल दुर्ग, गिरि या पहाड़ी दुर्ग तथा नर या मानव दुर्ग। कौटिल्य ने यह भी लिखा कि युद्ध नीति के हिसाब से गिरि दुर्ग ही सबसे उचित है, क्योंकि यह दुर्ग अक़्सर पहाड़ों के शीर्ष पर बना होता है ,जहां से पहाड़ी रास्तों व व्यापार मार्गों की रक्षा ज़्यादा आसानी से की जा सकती है। पर कौटिल्य की दृष्टि में सबसे मज़बूत और सुरक्षित, नर दुर्ग माना जाता है। जो वास्तव में ऊंची दीवारों से घिरा हुआ शहर होता है और जिसकी रक्षा वहां के सभी निवासी करते हैं।

आधुनिक शस्त्रों के आविष्कार के पहले अधिकांश शहर व व्यापार मार्गों की सुरक्षा हेतु स्थायी उपाय किया जाता था - सीमा क्षेत्र में क़िलों की श्रृंखला, या शहर को घेरती ऊंची दीवारें, या शहर के भीतर सुरक्षित गढ़ी, या इन सभी के मिश्रित उपाय। उदाहरण के लिए मिस्र तथा एसिरिया के प्राचीन शहर ऊंची-ऊंची दीवारों से घिरे हैं, कई दीवारें तो 37 मीटर ऊंची तथा 9 मीटर चौड़ी हैं।

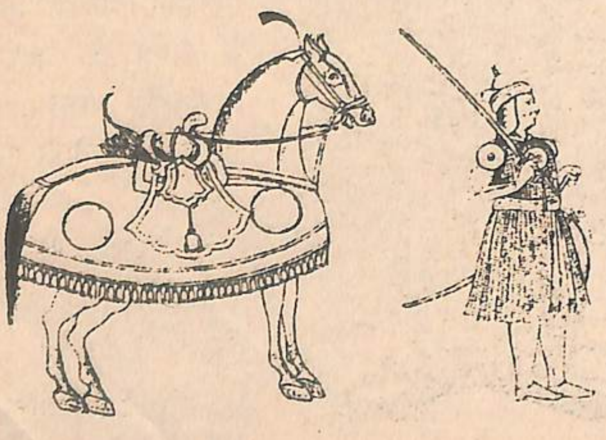

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार दुनिया का सबसे पुराना क़िला - जिसका प्रमाण उपलब्ध है - जेरिको नाम का नर दुर्ग या दीवार से घिरा शहर है। पश्चिम एशिया में स्थित यह नौ हज़ार साल पुराना शहर चार हेक्टेयर (दस एकड़) क्षेत्र में फैला हुआ है और उसे घेरने वाली दीवारें 6.5 मीटर ऊंची है। दीवार के बाहर 7.5 मीटर चौड़ी तथा 2.75 मीटर गहरी एक खाई है जो पानी से भरी रहती थी।

कुछ इतिहासकारों का कहना है कि इससे पूर्व भी अफ्रीका के कई कबीले युद्ध के समय मिट्टी, पत्थर व लकड़ी की सुरक्षा दीवारें बनाते थे जिसे कि एक प्रकार का क़िला भी कहा जा सकता है।

कई प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भी क़िलों तथा उनकी वास्तुकला का ज़िक्र पाया जाता है। ऋग्वेद में ऐसे कबीलों का वर्णन है जो पुर नामक क़िलाबंद बस्तियों में रहते थे। अन्य देशों की तरह भारत में भी सबसे प्राचीन दुर्ग, नर दुर्ग या दीवारों से घिरे शहर थे। ऐसे ही एक शहर का अच्छा उदाहरण है प्राचीन पाटलिपुत्र - जो आज का पटना है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इस शहर का जीता- जागता वर्णन है। यह मौर्य साम्राज्य की राजधानी थी, बाइस सौ साल पहले।

क़िले का नक्शा व आकार इस बात पर निर्भर करता है कि वह कहां बना है, यानी प्राकृतिक स्थिति तथा ज़मीन के प्रकार पर। सामान्य तौर पर क़िले प्राकृतिक अवरोधों का फ़ायदा उठाते हैं, जैसे नदी या पहाड़ या झील। अक़्सर वह आयताकार होता है। मैदानी इलाकों के क़िले साधारणत: पानी भरी खाई से घिरे होते थे और अंदर आने के लिए एक पुल होता था जिसे खतरे के समय उठाया जा सकता था। दीवारें इतनी चौड़ी होती थीं कि उनकी ऊपरी सतह पर सैनिक आराम

से खड़े होकर शत्रु पर तीर या गोली चला सकते थे। दीवारों में नियमित अंतरालों पर बुर्ज बने हैं जहां चौकीदार खड़े रहते थे। शुरू- शुरू में क़िले ,मिट्टी व पत्थर के बने होते थे, बाद में लकड़ी के और फिर चूना पत्थर व ईंटों के। कई क़िलों में एक से अधिक सीमा या सुरक्षा दीवारें भी मिलती हैं।

सुरक्षा दीवारों का सबसे मशहूर उदाहरण चीन की महान दीवार है। यह किसी एक शहर की सुरक्षा के लिए नहीं बनाई गई थी बल्कि एक पूरे इलाक़े को डाकुओं से बचाने के लिए खड़ी की गई थी। तीसरी शताब्दी में सम्राट शीवांगटी द्वारा निर्मित यह दीवार 2400 किलोमीटर लंबी है तथा औसतन 9 मीटर ऊंची। आधार पर यह दीवार 7.5 मीटर तथा शीर्ष पर 5 मीटर चौड़ी है। अंतरालों पर दीवार में चौकीदारी बुर्ज भी मौजूद हैं। मानव द्वारा बनाई गई इमारतों में से यह एकमात्र है जो कि अंतरिक्ष से दिखाई देती है।

पुराने दिनों के क़िले उस युग के हथियारों को ध्यान में रखकर भी बनाए जाते थे। उन दिनों लोग युद्ध में भाला, तलवार, तीर-कमान, गुलेल आदि का प्रयोग करते थे। क़िले के बड़े-बड़े दरवाज़े तोड़ने के लिए बड़े-बड़े दुरमुट प्रयोग में लाए जाते थे। क़िलों की दीवारें लांघने के लिए लकड़ी की मीनारें बनाई जाती थीं, जो कभी-कभी कई मंज़िल ऊंची होती थीं। मीनार की विभिन्न मंज़िलों से सैनिक क़िले में तीरों की बौछार बरसाते थे। कहा जाता है कि रोम के जूलियस सीज़र ने युद्ध में एक ऐसा सोपान मीनार बनाया जो लगभग 35 मीटर ऊंचा था।

बारूद के आविष्कार के पश्चात् क़िलों की वास्तुकला में कई परिवर्तन हुए। क्योंकि अब उन्हें तोपों की शक्ति का सामना करना पड़ा। और उनमें तोपों को रखने व प्रयोग में लाने की गुंजाइश भी शामिल करना ज़रूरी हो गया। पर आधुनिक युग के नाभिकीय हथियारों व मिसाइलों के कारण ये सभी क़िले अब एक प्रकार से बेकार व अनुपयोगी बन गए हैं। पर अब

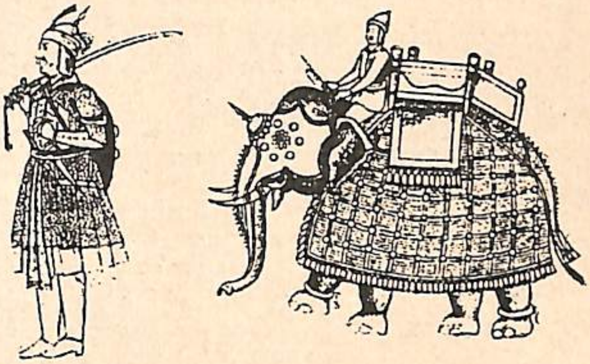

एक नई क़िस्म के क़िले का निर्माण होने लगा है। यह भूतल के नीचे कंक्रीट व स्टील से बनाया जाता है। ऐसे ही भूमिगत क़िले का एक उदाहरण संयुक्त राज्य अमरीका का पेंटगॉन है जो उस देश का सैन्य मुख्यालय है।

क़िले की दीवारों के भीतर आमतौर पर कई इमारतें होती हैं। उसका केंद्र तो राजा का महल होता है, जो कभी-कभी कई मंज़िल ऊंचा होता है। महल में अक़्सर दीवान-ए-आम होता है जहां राजा जनता से मिलता था और दीवान-ए-खास जहां वह खास मेहमानों से वार्तालाप करता था। फिर रानी व अन्य महिलाओं के लिए ज़नानख़ाना। राजा या नवाब के धर्म के अनुसार मंदिर या मस्जिद। बाद में तोपखाना, जहां तोपों व बारूद का उत्पादन किया जाता था। सैनिकों के रहने के लिए निवास तथा अन्य कारीगर व सेवकों के लिए बस्तियां।

किसी भी क़िले में पानी की भरपूर सप्लाई बहुत ही ज़रूरी है। अक़्सर पानी व अन्न की कमी के कारण ही क़िलाबंदी में हार हो जाती थी। प्राचीन ग्रंथों में यह उपदेश पाया जाता है कि क़िला बनाने के पहले भूमिगत जल का पता करना आवश्यक है। जहां भूमिगत जल का स्रोत उपलब्ध नहीं हो वहां बरसात के पानी को पोखरों या भूमिगत टंकियों में भंडारित किया जाता था, जिनकी स्थिति किसी को बताई नहीं जाती थी।

●●●

तुमने कभी स्वतंत्रता दिवस के समारोह का फोटो या वृतचित्र (फ़िल्म)देखा है? यदि हां, तो पृष्ठभूमि में लाल क़िले को ज़रूर देखा होगा जहां से प्रधानमंत्री अपना भाषण देते हैं। इस क़िले-महल का निर्माण शाहजहां ने करवाया था, साढ़े तीन सौ साल पहले। यमुना नदी पर स्थित यह भीमकाय इमारत शाहजहांनाबाद के नाम से जानी जाती थी।

लाल क़िला - दिल्ली

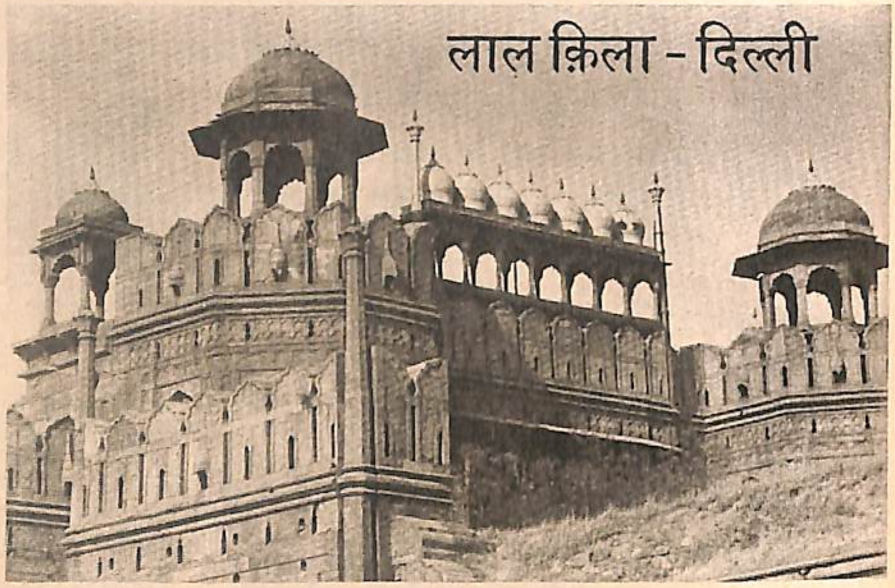

दिल्ली दरवाज़ा

"पृथ्वी पर यदि स्वर्ग है तो यहीं है.....यहीं है।" ये शब्द क़िले के दरबार की छत पर खुदे हैं। लाल बलुआ पत्थर से बना यह किला 3200 फुट लंबा व 1600 फुट चौड़ा है। उसकी दीवारें कहीं-कहीं 100 फुट से अधिक ऊंची हैं। इस क़िले का नक़्शा शाहजहां ने खुद बनाया था पर निर्माण दो फ़ारसी भाइयों, अहमद व हमीद उल आसार, ने दस साल की अवधि में किया। क़िले के दो मुख्य दरवाज़े हैं - पश्चिम की ओर का लाहौर फाटक तथा दक्षिण में दिल्ली फाटक।

दीवान-ए-आम इन दोनों फाटकों के अक्ष पर स्थित है। शाहजहां का मशहूर सिंहासन यहीं रखा रहता था, जिसे एक फ्रांसीसी जौहरी ने बनाया। यमुना नदी का पानी क़िले के बगीचों तक नहर द्वारा पहुंचाया जाता था।

महल और अन्य इमारतें बगदाद की वास्तुकला शैली में बने हैं। दीवान-ए-ख़ास व ख़ास महल में जोधपुर के मशहूर मकराना संगमरमर का उपयोग किया गया है। सफ़ेद संगमरमर की मोती मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने शुरू करवाया।

ग्वालियर

कहा जाता है कि जिस स्थान पर ग्वालियर (मध्यप्रदेश) का क़िला खड़ा है, पांचवीं शताब्दी में वहां एक सूर्य मंदिर था, जिसे हूणों ने बनाया था। ग्वालियर राज्य की शुरूआत की एक रोचक कहानी भी है। पर ऐसी कई कहानियां रची गई हैं जिन्हें राजा-महाराजा या अन्य सत्ताधारियों ने अपनी प्रशंसा में लिखवाया है। कभी-कभी इन कहानियों में राजा-महाराजा धर्म का भी सहारा लेते हैं। वे अपने वंशगत इतिहास में पारलौकिक पूर्वजों को शामिल करते हैं। ताकि जनता को लगे कि वे जन्म से ही राज्य करने के हक़दार हैं और इस हक़ के पीछे दैवीय स्वीकृति है।

चौथी शताब्दी में सूरजसेन नाम का एक कछवाहा राजा था, जो कुष्ठ रोग का मरीज़ था। एक दिन जब वह गोपागिरी पहाड़ पर शिकार करने गया तो ग्वालिपा नाम के एक साधु ने उसे पानी पिलाया, जिससे वह कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया। ग्वालिपा ने भविष्यवाणी की कि जब तक वह पाल का नाम अपनाता रहेगा ग्वालियर पर राज करेगा। सूरजसेन ने अपना नाम बदलकर सोहनपाल रख लिया। सूरजसेन के बाद उसके 83 वंशजों ने ग्वालियर पर राज किया। यह परंपरा तेजकरन के साथ ख़त्म हुई।

यह क़िला कई बार हस्तांतरित हुआ। दिल्ली के सुलतान, मुगलों व मराठा राजाओं ने इस पर अलग-अलग समय पर अपना हक़ जमाया। सिंधिया परिवार ने आज से कोई दो सौ साल पहले इसे अपने कब्ज़े में लिया था। उस वक्त सिंधिया की फौज का सेनापति एक फ्रांसीसी था। बाद में अंग्रेज़ों ने क़िले को जीत लिया पर उसे सिंधिया परिवार को लौटा दिया।

क़िला बलुआ पत्थर के पहाड़ पर बना है जो मैदान से 300 फुट ऊंचा है। उसके सात फाटकों में से अब केवल पांच बचे हैं। सबसे पुराना महल मानमंदिर है, जिसकी 300 फुट लंबी पूर्वी भुजा में पांच गोल मीनारें हैं। ग्वालियर का क़िला उन किलों में से एक है जिनमें पानी के प्राकृतिक स्रोत हैं। क़िले में कई कुंए व कुंड हैं, जिनमें सबसे बड़ा सूरज कुंड है। सबसे ऊंची इमारत (80 फुट) नौवीं शताब्दी का तेल मंदिर है, जो तेली की लाट के नाम से प्रसिद्ध है। ग्वालियर के क़िले का चित्र आवरण पृष्ठ दो पर देखो।

विजयनगर

विजयनगर राज्य (आज के कर्नाटक) का क़िलाबंद शहर दुनिया भर में मशहूर था। पंद्रहवीं शताब्दी में इसे भारत का सबसे धनी व शक्तिशाली शहर माना जाता था और दुनिया के मुख्य शहरों में भी गिना जाता था। आकार और वास्तुकला के हिसाब से शायद ही कोई दूसरा शहर इसका मुकाबला कर सकता था। रोम, स्पेन, पुर्तगाल व इरान से मुसाफिर यहां आया करते थे। चीन, बर्मा, मलेशिया, इरान अफ्रीका जैसे देशों के साथ इसके व्यापारिक संबंध भी थे। आज इस विशाल शहर के खंडहर मात्र उस बीते युग के साक्षी हैं।

दीवारों से घिरा यह शहर तुंगभद्र नदी के तट पर बसा था। उसकी दीवारों की कुल लंबाई साठ मील थी और शहर के केंद्र में राजा का महल तथा गढ़ था। इस शहर की स्थापना आज से साढ़े छह सौ साल पहले हुई थी। पर लगभग दो सौ साल बाद दक्कन के सुलतान ने उस पर हमला किया और पूरे शहर को जला डाला। आज शहर के सैंकड़ों मकानों का नामोनिशान मिट गया है, सिवाय एक दस वर्ग मील क्षेत्र के, जहां कुछ इमारतों के खंडहर ही इस युग की शान-शौक़त का प्रमाण हैं।

लाल क़िला - आगरा

आज के उत्तर प्रदेश का आगरा आमतौर पर ताजमहल के लिए जाना जाता है। पर वहां का लाल किला भी प्रसिद्ध क़िलों में से है। यह शहर एक समय अकबर की राजधानी थी। उसी ने वहां के लाल क़िले का निर्माण चार सौ तीस साल पहले करवाया था। यमुना नदी के तट पर स्थित इस क़िले को बनाने में आठ साल से अधिक समय लगा। इसकी परिमिति डेढ़ मील से अधिक है और उसकी 500 के क़रीब इमारतें गुजरात व बंगाल की शैली में लाल बलुआ पत्थर की बनी हैं।

इसकी दो पंक्ति वाली दीवारें कहीं कहीं 100 फुट से अधिक ऊंची हैं, और बीचोबीच बुर्ज भी बने हैं। नदी की तरफ एक फाटक, भूमिगत सुरंगों के एक जाल में खुलता है। शहर की तरफ क़िले की दीवारें पानी भरी खाई से घिरी हैं। मुख्य फाटक दिल्ली फाटक है जो पश्चिम की ओर है। यह मुगलों द्वारा बनाए महा फाटकों का सबसे पहला उदाहरण है। एक और फाटक है - हाथी पोल - जिसके दोनों बाजुओं में हाथी की मूर्तियां खड़ी हैं। देखा जाए तो हाथी हिंदु वास्तुकला से ज़्यादा संबंध रखता है। इस क़िले में हिंदु और मुस्लिम शैलियों का मिश्रण है।

दक्षिणी फाटक दो समान बुर्जों के बीच स्थित है और यह अमर सिंह फाटक कहलाता है। यह नाम शाहजहां के ज़माने में रखा गया।

अमर सिंह जयपुर के महाराजा का बेटा था। एक दिन जब शाहजहां ने उसे दीवान-ए-आम में डांटा तो गुस्से में आकर उसने सम्राट पर हमला कर दिया और फिर अपने घोड़े पर बैठकर इस गेट से बाहर निकल गया। शाहजहां तो बच गया पर अमर सिंह का साला उस खलबली में मारा गया।

ज़नानख़ाने का जहांगीर महल ग्वालियर के मानमंदिर की हिंदु शैली में बनाया गया है। इस महल में एक मंदिर भी है जहां अकबर की एक बीबी, जो आमेर के राजपूत राजा की बेटी थी, पूजापाठ करती थी। इस महल से अकबर और उसके राज दरबारी यमुना के किनारे हाथियों की लड़ाई देखते थे।

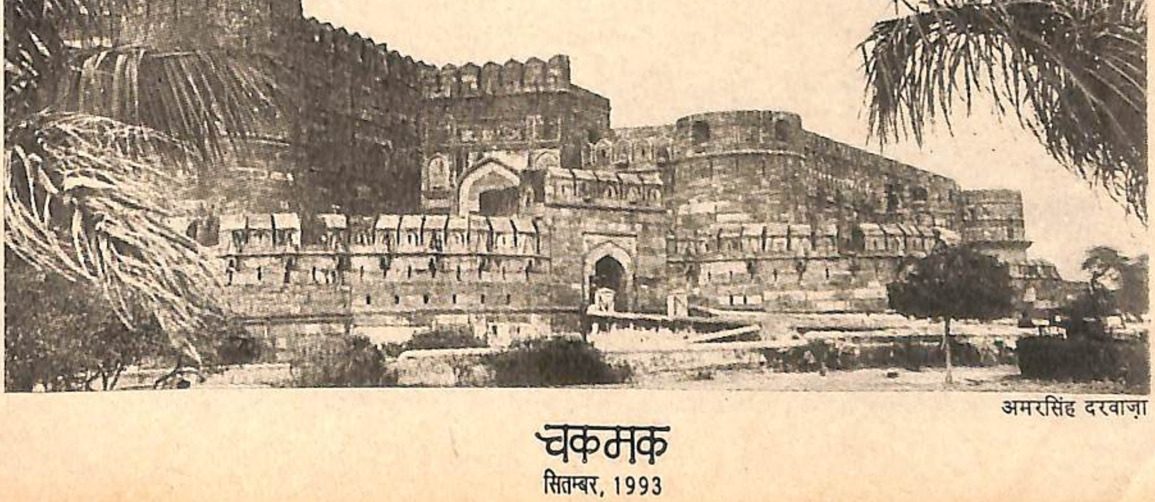

अमरसिंह दरवाज़ा

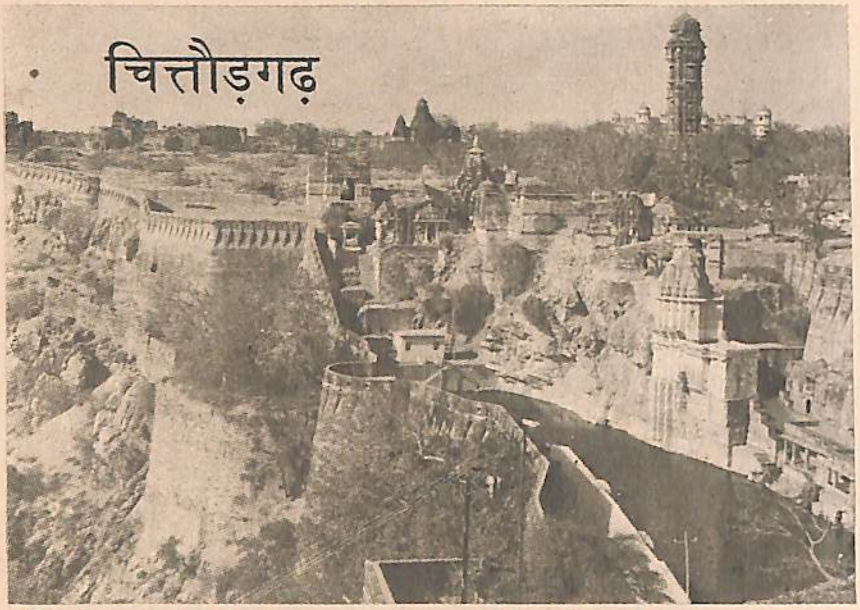

चित्तौड़गढ़ मेवाड़ के सिसोदिया राजाओं का गढ़ था। यह क़िला मैदान से 500 फुट ऊंचाई पर बना है। उसके अंदर जाने का मुख्य मार्ग पश्चिम की ओर है और इस मार्ग में सात भीमकाय फाटक पड़ते है। यह गढ़ मध्यकालीन हिंदु वास्तुकला का एक बेहतरीन नमूना है।

इस क़िले से संबंधित कथाओं में सबसे मशहूर कथा रानी पद्मिनी की है। अब ये कथाएं कितनी सही हैं और कितनी ग़लत, कहना मुश्किल है। ये कथाएं अक़्सर मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनाई जाती हैं। मौखिक या लिखित, दोनों विधियों में ये अक़्सर कहानीकार की कल्पना के रंगों से रंग जाती हैं। अधिकांश राजा या सुल्तान ऐसे कहानीकारों को अपने दरबार में आश्रय देते थे ताकि वे उनके गुण गाते रहें। ख़ैर, कुछ भी कहें, कुछ ऐसी कहानियां भी जन्म लेती हैं जो जात-पात, सत्ता आदि को पारकर एक सार्वभौमिक भाषा का रूप धारण कर लेती हैं।

रानी पद्मिनी की कहानी भी इस श्रेणी में आती है। वह मेवाड़ के राजा के चाचा की बीबी थी। लगभग 690 साल पहले अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़गढ़ पर हमला किया और क़िले की घेराबंदी कर ली। वह घेराबंदी इस शर्त पर समाप्त करने को राज़ी हुआ कि वह रानी पद्मिनी का चेहरा एक बार देख सके, जिसकी सुंदरता के बारे में उसने बहुत सुन रखा था। राजपूतों ने शर्त मंज़ूर कर ली पर अलाउद्दीन और रानी को आमने-सामने नहीं होने दिया। उन्होंने अलाउद्दीन को तालाब के पानी में रानी के चेहरे का प्रतिबिंब ही देखने दिया।

पर अलाउद्दीन कम चालाक नहीं था। उसके सिपाही क़िले के आसपास झाड़ियों में छिपकर बैठे थे, उन्होंने पद्मिनी के पिता का अपहरण कर लिया। उसे छोड़ने की कीमत थी अलाउद्दीन और पद्मिनी की शादी। सो पद्मिनी अलाउद्दीन के पड़ाव में गई, पर अकेली नहीं। साथ में सैनिकों की पलटन थी, नौकरों के वेष में। पड़ाव पहुंचने पर जो लड़ाई हुई, उसमें केवल पद्मिनी और उसके पिता ही बच पाए। अलाउद्दीन भड़क गया और उसने क़िले पर दुबारा हमला किया, और उसे जीत भी लिया। पर क़िला सुनसान था। क्योंकि सभी महिलाओं व बच्चों ने चिता पर आत्महत्या (जिसे वे जौहर कहते थे) कर ली थी।

क़िले के अंदर ही चित्तौड़गढ़ का मशहूर जयस्तंभ भी है। यह 535 साल पुराना है। इसे राणा कुम्भ ने बनवाया था, मालवा के सुल्तान पर विजय पाने की स्मृति में। इस नौ मंज़िली मीनार की प्रत्येक मंज़िल नक़्क़ाशी से भरपूर मंडप हैं। यहां बहुत से हिंदु व जैन मंदिर हैं।

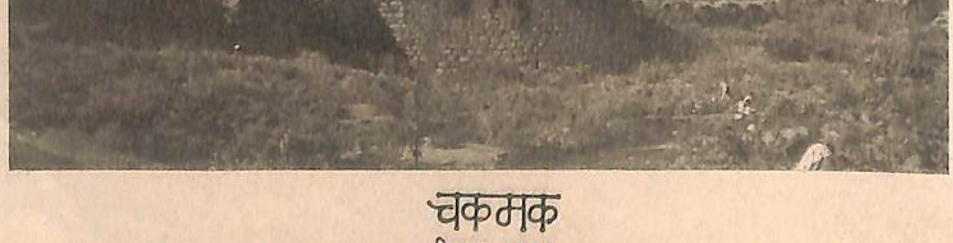

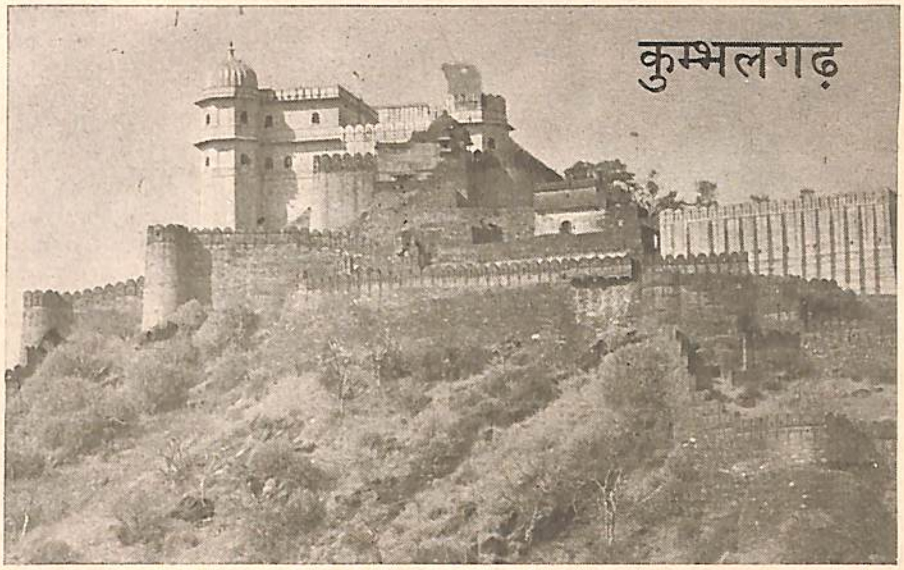

राजस्थान के अरावली पर्वतों पर स्थित यह शानदार किला मेवाड़ और मारवाड़ के राज्यों के बीच के संकीर्ण गिरिपथ या दर्रे को नियंत्रित करता था। इसकी दीवारें चीन की महान दीवार से कम नहीं है।

कहा जाता है कि इस क़िले का इतिहास दूसरी शताब्दी से शुरू होता है। प्रारंभ में यह एक जैन इमारत थी।

पर आज तो इसे मुख्य तौर पर राणा कुम्भ के नाम के साथ जोड़ा जाता है। कुम्भ ने इसे आज से कोई साढ़े पांच सौ साल पहले जीता था।

मेवाड़ राज्य की सीमाओं पर कुल 84 क़िले बने थे। इनमें से 32 तो राणा कुम्भ ने ही बनवाए। कुम्भलगढ़ में उसने कई इमारतें भी बनवाईं। जैसे बादल महल, जो उसने अपनी पत्नी, झालावड़ की राजकुमारी, के लिए बनवाया था।

कुम्भलगढ़ का सबसे मशहूर क़िस्सा उदयसिंह नाम के राजकुमार से संबंधित है जो चितौड़ राज्य का राजपुत्र था। कुछ शत्रुओं ने शिशु राजकुमार के क़त्ल की योजना बनाई। इस षड्यंत्र की ख़बर राजकुमार की दाई पन्ना तक पहुंची। दाई अपने बच्चे को राजकुमार की जगह पर सुलाकर राजकुमार को कुम्भलगढ़ ले गई। दाई का बेटा तो मारा गया पर उदयसिंह बच गया और बड़ा होकर राजा बना।

उसी साल एक अन्य राजकुमार का जन्म हुआ जिसका नाम अकबर था। इत्तेफ़ाक इस बात का है कि सालों बाद इसी अकबर ने उदयसिंह को परास्त किया। बाद में उदयसिंह के बेटे राणाप्रताप ने इस क़िले को त्याग दिया, जब क़िले के पानी का स्रोत कीड़ों से संक्रमित हो गया। अंत में अकबर के बेटे सलीम ने इस क़िले पर अपना हक जमाया।

इस क़िले के अनेकों मंदिरों में सबसे प्रसिद्ध है चामुण्डा देवी का मंदिर। इस मंदिर के शीर्ष पर एक छत्री है जो मेवाड़ राज्य परिवार का प्रतीक है और जो पारंपरिक हिंदु शैली में बनाई गई है।

दुनिया में सबसे बड़ा गुंबद कहां है? तुमने इस सवाल का जवाब ज़रूर कभी सामान्य ज्ञान की परीक्षा में दिया होगा। कुछ लोगों का कहना है कि रोम के सेंट पीटर गिरिजाघर का गुंबद सबसे बड़ा है। पर कुछ तो कहते हैं कि यह श्रेय बीजापुर (कर्नाटक) के गोल गुंबद को है। यह गुंबद बीजापुर के विशाल नर दुर्ग का हिस्सा है जहां से आदिल शाही वंश के सुलतान राज्य करते थे।

इस नर दुर्ग की दीवारें 9.5 किलोमीटर लंबी है। इन पर बने सौ बुर्ज इन दीवारों को और मज़बूत बनाते हैं। ये बुर्ज इतने बड़े हैं कि उनमें तोप चलाने के लिए भी पर्याप्त जगह है। बुर्ज-ए-शेरज़ा में पीतल की एक मध्यकालीन तोप रखी है जो दुनिया की सबसे बड़ी तोप मानी जाती है। मालिक-ए-मैदान नाम की यह तोप पंद्रह फुट लंबी और चालीस टन से अधिक वज़नदार है। यह दो फुट चार इंच व्यास की गोलियां फेंकती थी जिनका वज़न एक टन से भी अधिक होता था।

इस क़िले का निर्माण आदिल शाही वंश के प्रथम सुलतान ने प्रारंभ करवाया। बाद के सुलतानों ने जामा मस्जिद, गगन महल, जय मंदिर, आनंद महल आदि इमारतें बनवाईं।

यह क़िला खुले मैदान में बना है। एक ज़माने में क़िला दो दीवारों से घिरा था और पानी भरी खाई भी थी। क़िले में कई मस्जिद व मकबरे हैं। बीजापुर का गोल गुंबद, जो 330 साल पुराना है, मुहम्मद आदिल शाह के शासन काल में बनवाया गया था। इस गुंबद की चार मीनारें हैं। हर मीनार सात मंज़िल की हैं। प्रत्येक मीनार के शीर्ष में एक गैलरी है जहां से हल्की से हल्की फुसफुसाहट गुंबद के किसी भी कोने में सुनी जा सकती है। क़िले की कई इमारतों का पुनर्निर्माण मराठा और अंग्रेज़ों के शासन काल में हुआ है।

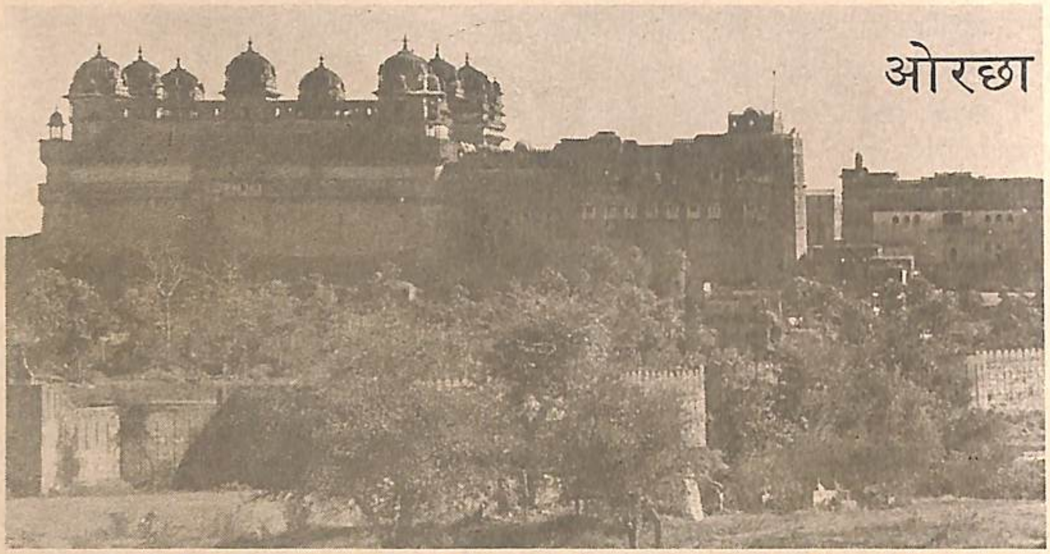

मध्य प्रदेश की बेतवा नदी में स्थित यह द्वीप क़िला बुंदेला राजाओं का गढ़ था। नदी तट और द्वीप एक पुल के ज़रिए जुड़े हैं। यहां के तीन प्रसिद्ध महलों में से सबसे पुराना रामजी मंदिर है जो आज एक तीर्थस्थान है। दूसरा है राज महल और तीसरा जहांगीर महल। ओरछा का सबसे मशहूर राजा मधुकर शाह था। उसी ने वहां का चतुर्भुज मंदिर लगभग चार सौ पच्चीस साल पहले बनवाया था। इस मंदिर का भीतरी भाग अन्य भारतीय मंदिरों जैसा संकीर्ण व अंधकारपूर्ण नहीं है बल्कि यह यूरोपीय गिरिजाघरों जैसा खुला व विशाल है।

जहांगीर महल को बीर सिंहदेव ने बनवाया। बीर सिंह के सम्बंध में एक रोचक कहानी है। बीर सिंह ने जहांगीर के कहने पर अबुलफ़ज़्ल को क़त्ल किया था जो अकबर के नवरत्नों में से एक था। इनाम के तौर पर जहांगीर ने बीर सिंह को ओरछा की गद्दी पर बिठाया। बीर सिंह ने बहुत सारी इमारतें बनवाईं। इन इमारतों में हिंदु व मुस्लिम वास्तुकला शैलियों का संयोजन दिखता है। जैसे कि ओरछा, दतिया, झांसी व बुंदेलखण्ड के कई क़िलों में पाया जाता है।

एक और रोचक किस्सा बीर सिंह के बेटे जुझान सिंह से संबंधित है। जुझान सिंह को शक था कि उसके भाई हरदौल सिंह और उसकी पत्नी का संबंध है। उसने भाई को खाने पर बुलाया और अपनी पत्नी को उसे विषैला भोजन खिलाने को मजबूर किया। असल में वे दोनों बेकसूर थे। रानी ने देवर को यह भोजन खिलाने से इंकार कर दिया। पर शर्म के मारे देवर ने भोजन खा ही लिया और मर गया। जब लोगों को पता चला तो उस जगह पर हरदौल की स्मृति में समाधि बनाई गई। आज भी गांव-गांव में हरदौल के मंदिर पाए जाते हैं। यानी परंपराओं में मनुष्य भी कभी-कभी भगवान के रूप में पूजा जाता है।

जिस भीमकाय चट्टान पर तिरुचिरापल्ली का यह क़िला और मंदिर स्थित है, वह मैदान से 250 फुट ऊंची है। इस चट्टान पर तीसरी शताब्दी की एक शिलालिपि खुदी हुई है। प्राचीन काल के मशहूर यूनानी भूगोलशास्त्री टोलमी ने भी इस क़िले का ज़िक्र अपनी किताबों में किया था। पर आज गढ़ का ज़्यादा हिस्सा बचा नहीं है। सोलहवीं शताब्दी में बनाई गई उसकी इमारतों में से केवल मुख्य दरवाज़ा ही शेष है।

दक्षिण भारत के राज्यों को हराने व नियंत्रण करने में इस क़िले की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसीलिए कई राजाओं ने इसको जीतने का प्रयास किया। इनमें मदुरई के नायक राजा, मराठा व कर्नाटक के विभिन्न नवाब भी शामिल थे। दो सौ साल पहले, जब अंग्रेज़ व फ्रांसीसी भारत पर हुकूमत चलाने की कोशिश में आपस में लड़ रहे थे, तब दोनों ने इसे जीतने की हज़ार कोशिशें की। अंत में विजय अंग्रेज़ों की ही रही।

आज क़िले का सबसे मुख्य अवशेष उसका मंदिर हैं। इनमें मुख्य रघुनाथस्वामी मंदिर है जो दसवीं शताब्दी में निर्मित हुआ। मंदिरों के कई गोपुरम हैं जिनमें एक सौ फुट से भी अधिक ऊंचा है। मध्य आंगन को घेरने वाले एक हज़ार नक़्क़ाशीयुक्त स्तंभ हैं।

रायगढ़

शिवाजी ने अपनी राजधानी रायगढ़ (महाराष्ट्र) में बनाई। रायगढ़ का क़िला भारत के सबसे शक्तिशाली क़िलों में गिना जाता था। पंद्रह साल पहले स्विट्ज़रलैंड के लूर्सन शहर में क़िलों की प्रदर्शनी में इस क़िले का मॉडल प्रदर्शित किया गया। वहां इसे दुनिया के सबसे श्रेष्ठ गिरी दुर्ग का नमूना माना गया।

क़िले में पहुंचने के लिए 1400 सीढ़ियां चढ़ना पड़ती हैं। महादरवाज़े के दोनों बाजु दो बुर्ज हैं जो 70 फुट ऊंचे हैं। क़िले में दीवारों की तीन कतारें हैं और पानी की कई टंकियां भी, जिनमें सबसे बड़ी गंगासागर है। शिवाजी का महल वेदिका के पास है तथा उसके इर्दगिर्द शिवाजी के मंत्रियों के मकानों के खंडहर भी दिखते हैं। क़िले में बाज़ार भी था जिसमें लगभग चालीस दुकानें थीं। क़िले में लगभग दो हज़ार लोग रहते थे।

शिवाजी की मृत्यु के बाद मुगलों ने क़िले पर आक्रमण किया। घेराबंदी सात महीने तक चली। क़िला जीतने पर मुगलों ने उसे जंजीरा के सीधी वंश के हवाले कर दिया। पेशवाओं ने क़िले पर फिर से कब्ज़ा किया पर बाद में अंग्रेज़ों ने मराठों को हराकर, रायगढ़ व अन्य कई क़िलों पर अपना अधिकार जमाया ।

माण्डू

माण्डू का नर दुर्ग निमाड़ के मैदान से 1000 फुट ऊपर विंध्याचल पवर्तों पर स्थित है। माण्डू शब्द मंडप से बनता है - यानी यह मंडपों का किला है। मुस्लिम लोग उसे शादियाबाद कहते थे, यानी खुशियों का शहर। इसका इतिहास छठवीं शताब्दी में शुरू होता है, जब उज्जैन के राजा ने अपनी राजधानी को धार स्थानांतरित किया। उसने अपनी नई राजधानी धार से बीस किलोमीटर दूर, पठार पर माण्डू का क़िलाबंद महल बनवाया। कई राजाओं ने यहां इमारतें बनवाई। उनमें एक राजा भोज था

दिल्ली की सल्तनत के पतन के बाद धार के राजा ने अपने आप को मालवा का सुल्तान घोषित कर दिया। फिर उसने माण्डू को और मज़बूत बनाया। उसके बेटे होशंगशाह ने आज से कोई साढ़े पांच सौ साल पहले माण्डू में और कई सारी इमारतें बनवाईं। इनमें एक उसका खुद का मकबरा भी था। एक और इमारत थी जामा मस्जिद। होशंगशाह की मृत्यु महमूद खां के हाथ हुई जिसने बाद में खिलजी वंश की स्थापना की। महमूद ने ही माण्डू का अतिसुंदर जहाज़ महल बनवाया।

तुम्हें याद होगा कि राजा कुम्भ ने चितौड़गढ़ में एक जयस्तंभ बनवाया था। वह लड़ाई इसी महमूद के खिलाफ लड़ी गई थी और दोनों पक्षों ने विजय का दावा किया था। महमूद ने माण्डू में अपना सात मंज़िला जयस्तंभ भी बनवाया था, पर बाद में यह नष्ट हो गया, इसलिए आज उसका कोई निशान नहीं बचा है।

माण्डू का नाम हमेशा उसके आखिरी सुलतान, बाज़ बहादुर व हिंदु रानी रूपमति की अमर प्रेम कथा से जोड़ा जाता है। इस कहानी का अंत तब हुआ जब अकबर के सेनापति अधम खां ने माण्डू को जीत लिया। इस जंग में अधम खां ने बहुत ज़्यादती की और माण्डू को लूटा। बाज़ बहादुर भाग निकला और क़ैद होने के पहले ही रानी रूपमति ने आत्महत्या कर ली। अकबर ने अधम खां को मौत की सज़ा दी - उसे आगरा के लाल क़िले से नीचे फेंक दिया गया।

फिर क़िला मुगलों, मराठों, और अंत में अंग्रेज़ों के नियंत्रण में रहा।

जहाज़ महल

गुलबर्ग

गुलबर्ग (कर्नाटक) का यह क़िला बहामणी सुलतानों का गढ़ था। इस नर दुर्ग की प्राकृतिक स्थिति में ऐसा कोई अवरोध मौजूद नहीं है जो इसे और सुरक्षित व मज़बूत बना सके। इसीलिए क़िले की दीवारों को 50 फुट मोटा बनाया गया है। साथ ही वह पानी भरी खाई से घिरा हुआ है। प्रवेश के लिए एक पुल है जो आक्रमण के समय उठाया जा सकता है। यह एकमात्र भारतीय क़िला है जिसके अंदर की गढ़ी - बाला हिस्सार - दुनिया के पश्चिमी क़िलों की शैली में बनी है । इस क़िले की बनावट में यूरोपीय क़िलों व महलों का प्रभाव साफ नज़र आता है।

जंजीरा

जंजीरा का पानी से घिरा(आवरण चित्र देखो)मज़बूत व सुंदर दुर्ग, जल दुर्गों का एक अच्छा उदाहरण है। यह दुर्ग बंबई के दक्षिण में अलीबाग तट के पास अरब सागर में एक द्वीप पर स्थित है। इसे एबिसीनिया के सीधियों ने अब से लगभग चार सौ साल पहले बनवाया था। सीधी लोग गुलामों की खरीद-फरोख़्त करते थे। वे दक्कन के पठारी इलाकों से गुलामों को इकट्ठा करके विदेशों में बेचते थे। इस कारोबार के लिए उन्होंने बीजापुर के आदिल शाही सुलतानों से भी समझौता किया। बदले में वे जंजीरा, गोवा, सूरत आदि से हज पर जाने वाले मुसाफिरों के जहाज़ों की रक्षा करते थे।

मराठा राजाओं ने इस दुर्ग को जीतने की कई कोशिशें कीं, पर सफल नहीं हो पाए। शिवाजी के पुत्र संभाजी ने इस द्वीप तक समुद्री सुरंग खोदने की भी कोशिश की। सीधियों ने मुगलों, पुर्तगालियों व अंग्रज़ों को भी हराया था।

टीपू सुल्तान का मक़बरा

श्रीरंगापट्टनम

टीपू सुलतान की मौत के बाद दक्षिण भारत पूर्ण रूप से अंग्रेज़ों के शासन में आया। मैसूर की सल्तनत विजयनगर के पतन के दो सौ साल बाद स्थापित हुई। टीपू सुलतान इस वंश का सबसे प्रसिद्ध सुलतान था। उस ने अंग्रेज़ों से मुकाबला करने के लिए फ्रांसीसियों से समझौता किया। और अंग्रेज़ों ने उसे हराने में मराठा व हैदराबाद के निज़ाम की मदद ली। अंत में टीपू की मौत इसी क़िले में हुई जो कावेरी नदी के एक द्वीप पर बना है। उसके बाद वाडियार राजाओं ने मैसूर राज्य पर अपना हक़ जमाया।

जैसलमेर

जब राजस्थान की बात उठती है तो मन में जैसलमेर का चित्र उभरता है। यह रेतीला, मरुस्थली इलाक़ा एक ज़माने में यह अनेक युद्धों का मैदान रहा है। जैसलमेर का मरुस्थली क़िला, जिसे रावल जयसाल ने बनवाया, एक बहुत ही महत्वपूर्ण क़िला था, क्योंकि यह ईरान व अफगानिस्तान के मुख्य व्यापार मार्ग पर स्थित है। आवरण पृष्ठ दो देखो।

जैसलमेर का राजपूत राजा इस मार्ग पर गुज़रते कारवांओं को लूटता था। ऐसा ही एक कारवां अलाउद्दीन खिलजी का था। क्रोधित खिलजी ने उलटकर क़िले पर हमला किया और क़िले को घेर लिया। घेराबंदी आठ साल तक चली। इस दौरान राजपूत राजा के बेटे व खिलजी के सेनापति में दोस्ती हो गई। वे रोज़ सुबह शतरंज खेलने बैठते, फिर जंग के मैदान में उतरते, जब बिगुल उन्हें पुकारता। कहा जाता है कि राजपूतों की हार के पश्चात् सभी महिलाओं व बच्चों ने आत्महत्या कर ली, पर राजकुमार ने अपने बच्चों को सेनापति के हवाले कर दिया था।

जैसलमेर की उन्नति तब हुई जब अकबर ने उस पर अपना अधिकार स्थापित किया। इराक, ईरान, अरब देश व मिस्र के साथ व्यापार खूब बढ़ा।

क़िले में 98 बुर्ज हैं जो चौदहवीं शताब्दी में बनाए गए थे। सोलहवीं शताब्दी में उनकी ऊंचाई बढ़ाई गई थी। क़िले में बरसात का पानी इकट्ठा करने हेतु एक बड़ा पोखर और व्यापारियों को ठहराने के लिए बनाए गए कई मकान आज भी हैं। क़िले की सबसे ऊंची इमारत मेघ दरबार है। इसके अलावा, क़िले में अनेक जैन मंदिर हैं और स्मृति छत्रियां भी।

गोलकुंडा

बहामणि राजवंश के पतन के बाद गोलकुंडा के तुर्की राज्यपाल ने सुलतान कुली कुतुबशाह की उपाधि लेकर अपना राज्य स्थापित किया। उसने ही आज के हैदराबाद शहर की नींव रखी थी। शताब्दियों पहले यह इलाक़ा वारंगल राजाओं के अधीन था।

गोलकुंडा क़िला तिहरी दीवार से घिरा है। सबसे बाहरी दीवार पूरे शहर को घेरती है। बीच की दीवार उस पहाड़ी को घेरती है, जिस पर क़िला बना है। भीतरी दीवार पहाड़ी के ऊपरी हिस्से को घेरती है। भीतरी दीवार लगभग पांच किलोमीटर लंबी है और उस पर 87 बुर्ज बने हैं। इस दीवार में कुल आठ फाटक थे पर अब केवल चार बचे हैं।

ऋतुओं का स्कूल

पोस्टमैन है सूरज चाचा
डाक सुबह की लाता है
द्वार-द्वार किरणों की पाती
ठीक समय पहुंचाता है

चुन-चुन करती चिड़िया रानी
चुगती दाना, पीती पानी
गीत सुनाती प्यारे-प्यारे
जैसे हो आकाशवाणी
मौसम का भी हाल इसी से
हमें पता चल जाता है

ऋतुओं का स्कूल खुला है
नहीं पढ़ाई यहां बला है
हल्का बहुत हवा का बस्ता
धूप-छांव का पाठ चला है
क्लास छूटती जब रिमझिम की
घंटा मेघ बजाता है

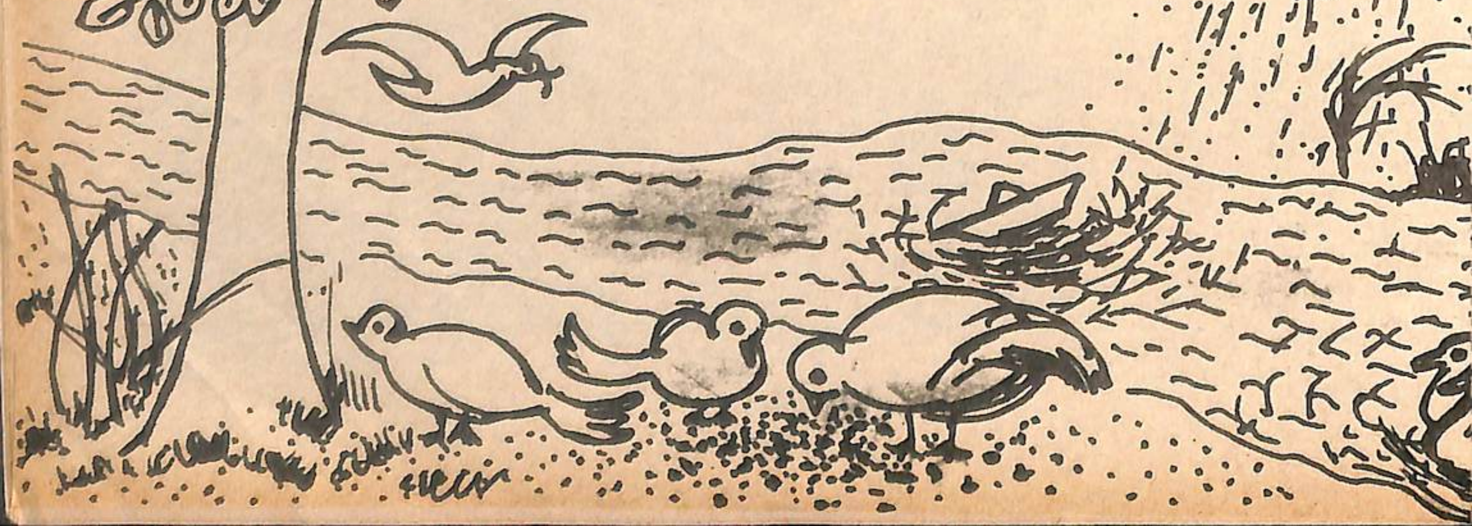

शाम को खेला करते हम सब
रंग-बिरंगे फूलों से
सुंदर-सुंदर तितली के संग
इंद्रधनुष के झूलों से
हिल-मिलकर यूं हंसते-गाते
सारा दिन कट जाता है

रात में जब अंधियारा छाया
हर-आहट ने हमें डराया
चौकीदारी मुस्तैदी से
चंदा मामा करने आया
निंदिया वाले बैंक में अपने
सपनों का इक खाता है

❑ जया 'नर्गिस'
चित्र : सुधा मेहता

तार से आकृति बनाओ

हमें तार को मोड़कर बनाई हुई कुछ अच्छी चीज़ें देखने को मिलीं तो हमने सोचा कि क्यों न तुम्हारे लिए इस बार वही दी जाएं। इस काम के लिए लोहे का थोड़ा मोटा तार जुगाड़ो। साथ में मोटा काग़ज़, कैंची, गोंद और तार काटने के लिए अगर कुछ मिल सके तो वो भी इकट्ठा करो। तार की जगह कुछ और भी चीज़ें हो सकती हैं जैसे घर में पुराने पड़े हुए जूड़े के पिन आदि। वैसे तो यहां दिए हुए चित्रों को देखकर तुम आसानी से बनाना शुरू कर सकते हो फिर भी हम तुम्हें हर चित्र के अनुसार जानकारी देते चलते हैं।

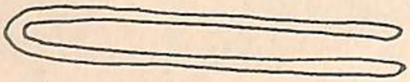
1

चित्र-1 में दिखाए तरीक़े से तार के एक टुकड़े को मोड़ना है। तार का टुकड़ा कितना बड़ा हो यह इस बात पर निर्भर करेगा कि तुम कितनी बड़ी आकृति बनाना चाहते हो।

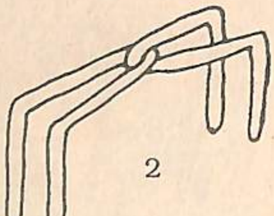
2

इसी तरह एक और टुकड़ा लो और दोनों को एक दूसरे में फंसाते हुए चित्र में दिखाए तरीक़े से मोड़ो। इस तरह चार टांगें बन गईं।

अब पिछले दो टुकड़ों के बराबर ही तीसरा टुकड़ा लो। इस तार के टुकड़े को दोनों सिरों से मोड़ना है। एक सिरे से थोड़ा कम, यह पूंछ होगी। और दूसरे सिरे से पहले से थोड़ा ज़्यादा, इससे गर्दन बनेगी। अब इसे चित्र-3 के अनुसार चित्र-2 वाली आकृति में फंसा दो।

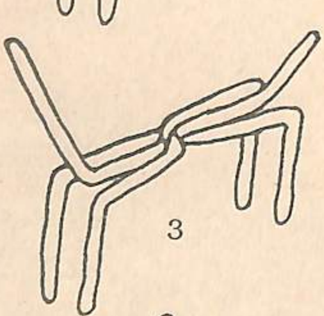
3

एक छोटा तार का टुकड़ा लेकर गर्दन वाले हिस्से में इस तरह लपेटो कि चित्र-4 जैसी आकृति बन जाए। अब इस आकृति में मोटे काग़ज़ में से काट कर सिर लगाना है। चित्र-5 में सिर और मुंह की आकृतियां देखकर सोचो और खुद ही काग़ज़ में से दोनों आकृतियां काटकर लगाओ। नुकीले सिरों को गोंद से चिपका दो और आंख तो तुम बना ही लोगे।

अब बचा धड़ बनाने का काम तो तार का लंबा-सा टुकड़ा लो और इसे गर्दन व पूंछ के बीच लपेट दो। चित्र-6 में तैयार आकृति दिखाई गई है अब यह तुम तय करो कि यह क्या है?

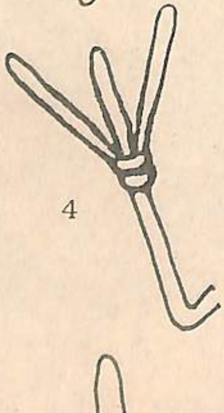
4

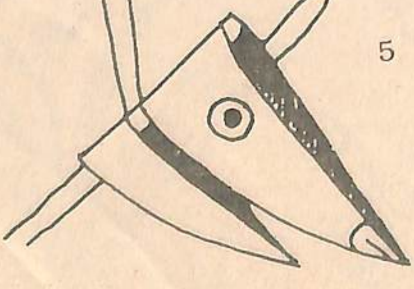
5

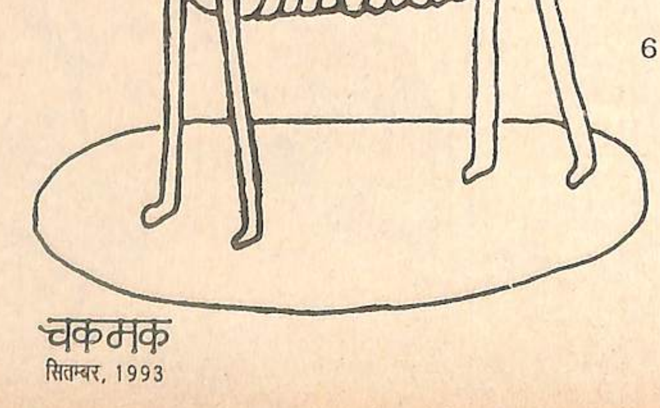
6

कहानी

तीन झूठ और हर झूठ में चालीस गप्पें

बहुत दिन हुए एक बादशाह था। उसकी बेटी शादी के लायक़ हो गई। बहुत-देशों के बादशाहों के बेटे उसके साथ शादी करने के इरादे से आए, पर शहज़ादी बड़ी तुनुकमिज़ाज थी और वह किसी से शादी करने के लिए तैयार नहीं हुई।

एक बार बादशाह ने अपनी बेटी को बुलाया और बोला "ऐ, मेरी आंखों के तारे! सारे बादशाहों से मैंने कह रखा है कि मैं तेरे लिए दूल्हा ढूंढ रहा हूं, एक से एक बहादुर नौजवान आ रहे हैं, पर तू सबको मना कर रही है। आख़िर इसकी वजह क्या है?"

"पिता जी!" बेटी ने जवाब दिया, "मैं शादी उसी के साथ करूंगी, जो मुझे तीन झूठ गढ़कर सुनाए और हर झूठ में चालीस गप्पें हों, बशर्ते उन्हें वह दिलचस्प ढंग से सुना सके।"

बादशाह ने चारों ओर मुनादी करवाने का हुक्म दिया।

"जो कोई तीन झूठ गढ़ेगा और हर झूठ में चालीस गप्पें सुनाएगा, उसी के साथ मैं अपनी बेटी की शादी कर दूंगा।"

लोग चारों ओर से शहज़ादी के साथ शादी की तमन्ना लिए आने लगे और गप्पें गढ़ने लगे। बादशाह ने अपने सारे मंत्रियों से कहा, "अगर कोई तीन झूठ सुनाए और हर झूठ में चालीस गप्पें हों और वह बिल्कुल सफ़ेद झूठ हों, तो कहिए कि यह झूठ है, अगर सच हों, तो कहिए सच है। अगर आप ने सच को झूठ बताया, तो आपके सिर कटवा दूंगा और आपकी जायदाद लुटवा दूंगा।"

हर नौजवान अपनी-अपनी गप्पें सुनाने लगा। हर बार, जब भी बादशाह ने मंत्रियों से पूछा, "यह सच है या झूठ?"

"ऐसा तो होता रहता है," उसे जवाब मिला।

बहुत से बादशाह और शहज़ादे आए और ख़ाली हाथ लौट गए।

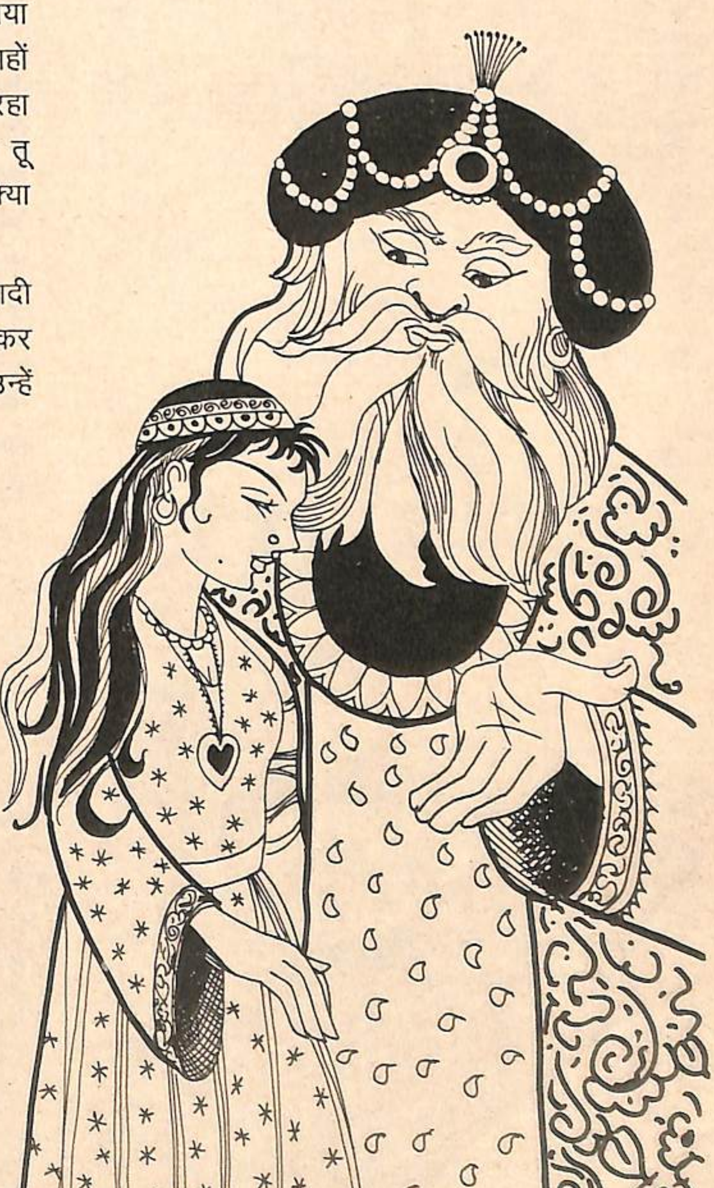

उस शहर में एक ग़रीब नौजवान रहता था। एक बार वह सूखी टहनियां इकट्ठी करने पहाड़ों में गया, तो उसने बादशाह की यह मुनादी सुनी।

"जो तीन झूठ और हर झूठ में चालीस गप्पें गढ़कर सुनाएगा, उसकी शादी शहज़ादी के साथ कर दी जाएगी।"

"अहा," ग़रीब नौजवान ने सोचा, "बोलने का यह बड़ा अच्छा मौक़ा मिला है।" और वह महल की ओर चल दिया। लेकिन पहरेदार उस पर बरस पड़े और उसे महल के दरवाज़े में नहीं घुसने दिया।

"मैं बादशाह से एक दरख़ास्त करने आया हूं।" नौजवान बोला।

"कौन-सी दरख़ास्त करेगा। चल भाग यहां से, यहां मत खड़ा हो।"

"मैं यह बताने आया हूं कि मेरे मालिक के पास दो सौ भेड़ें हैं, जिन्हें बादशाह को देना है।" नौजवान ने कहा।

एक पहरेदार फ़ौरन दौड़कर बादशाह के पास पहुंचा और बोला "शहंशाह, एक नौज़वान आया है, कहता है, उसके मालिक के पास बादशाह के लिए दो सौ भेड़ें हैं।"

बादशाह बहुत खुश हुआ, "उसे मेरे सामने पेश करो!"

नौजवान को पेश किया गया। बादशाह चिल्लाकर बोला, "बता कहां हैं तेरी भेड़ें?"

नौजवान बोला, मुझे बोलने की इजाज़त दीजिए। मैं ग़रीब और अनाथ हूं। मैं अपने बाप का इकलौता बेटा था, मेरे भाई मर रहे थे, पर हम तीन बच गए। तीनों भाइयों ने न एक दूसरे को देखा था और न ही पहचानते थे। एक दिन हम अचानक मिल गए, दुआ-सलाम हुई। मैंने देखा- हममें से एक के चोगे में गरेबान नहीं है, दूसरे के में आस्तीन नहीं है और तीसरे के में पल्ला नहीं है। जिस तरह 'अंधा अंधे को अंधेरे में भी ढूंढ लेता है,' हम तीनों मिले और दोस्त बन गए। हम चल पड़े, न हमने रास्ते पर क़दम रखा और न ही रास्ते के किनारे चले। हमें ज़मीन पर तीन सिक्के पड़े दिखाई दिए; उनमें से दो बिल्कुल घिसे हुए थे और एक पर कुछ भी नहीं

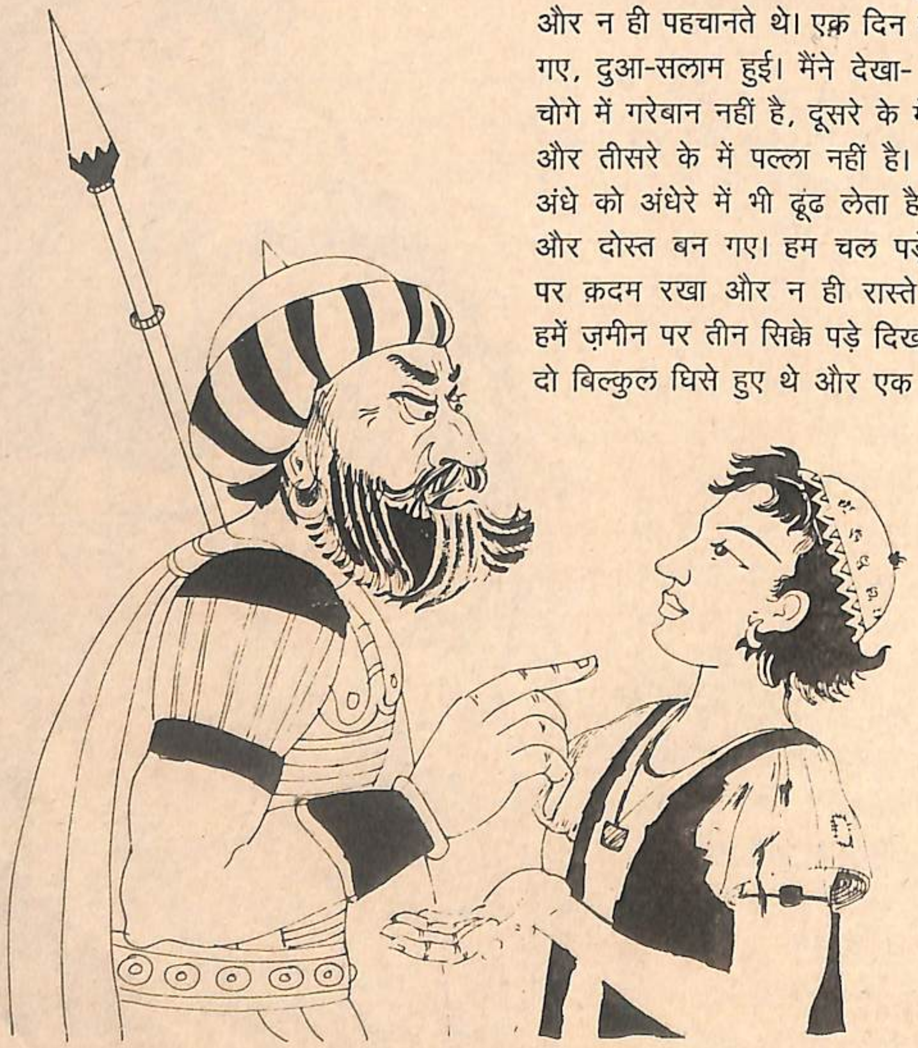

लिखा था। हमने वह सिक्का उठा लिया, जिस पर कुछ नहीं लिखा था और आगे चल पड़े। चलते रहे, चलते रहे और बहुत दूर पहुंच गए। फिर घाटी में उतरे। हमने नदी में तीन मछलियां देखीं। दो मरी हुई थीं, और एक बेजान थी। हमने बेजान मछली उठा ली और उस भाई के पल्ले में डाल दी, जिसके चोगे में पल्ला नहीं था। आगे चले। हमने अपने सामने तीन घर देखे। दो बिना छत के थे और एक पर छत बिल्कुल नहीं थी।

हम उस घर में घुसे, जिस पर छत नहीं थी, वहां हमने तीन देग देखे दो में छेद ही छेद थे और एक बिना पेंदे का था। हमने बेजान मछली बिना पेंदे के देग में डाल दी और पानी डालकर उसे पकाने की तैयारी करने लगे। सूखी टहनियां ढूंढीं, पर एक टहनी भी नहीं ढूंढ पाए। बिना आग के ही मछली पकाई। आंच में कोई कमी नहीं रखी, सारी हड्डियां गल गईं, पर गोश्त कच्चा रह गया। खाते-खाते हम तीनों के पेट भर गए और इतने मोटे हो गए कि जब हमने बाहर निकलना चाहा, तो दरवाज़े में से नहीं निकल पाए। हमें दीवार में एक छोटी-सी दरार दिखाई दी और हम उसी में से बाहर निकलकर आगे चल पड़े। चलते रहे, चलते रहे, बहुत दूर निकल गए और मैदान में आ पहुंचे।

हमने देखा घास पर बिना पैदा हुए खरगोश का बच्चा पड़ा है। हमने बिना रोपे गए सरकंडे की बिना तोड़ी हुई डाल का डंडा बनाकर खरगोश के बच्चे को मारा। उसने तीन कलाबाज़ियां खाईं और ढेर हो गया। हमने उसके टुकड़े कर दिए। खरगोश में से तीन मन चरबी निकली और तीन मन गोश्त। गोश्त को हमने न उबाला, न सुखाया और जल्दी से उठाकर उसे खा लिया, पर पेट नहीं भरा, भूखे रह गए। मेरे दोनों बड़े भाई गुस्सा हो गए और मुझसे नाराज़ होकर वहां से चले गए। चरबी मेरे लिए बच गई, मैं बड़ा खुश हुआ। अपने जूते उतारकर मैं उन पर चरबी मलने लगा। सारी चरबी मैंने एक ही जूते पर लगा दी और दूसरे के लिए कम पड़ गई। मैं बुरी तरह थककर सो गया।

अचानक मैंने शोरगुल सुना। मैं फ़ौरन बिस्तर से उठा तो देखा, जिस जूते पर मैंने चरबी मली थी, वह बिना चरबी मले जूते से लड़ रहा है। मैंने दोनों जूतों के जबड़ों पर घूंसे मारे और फिर सो गया। आधी रात में मैं ठंड से कांपता हुआ उठा, तो देखा, जिस जूते पर मैंने चरबी मली थी, वह मेरा चोगा ओढ़कर सो रहा है, और जिस जूते पर मैंने चरबी नहीं मली थी, वह नाराज़ होकर कहीं भाग गया। मैंने चरबी मले हुए जूते को जगाकर उसे पहन लिया। बिना पल्ले के चोगे का पल्ला उठाकर पीछे पेटी में उड़ेल लिया और घर आ गया। जब मैं गया था, तो घर में मेरी बुढ़िया मां और मुर्गा बचे थे। और जब घर लौटा, तो देखा न बुढ़िया घर में है, न मुर्गा। मैंने मुड़कर देखा तो दूसरा जूता भी नदारद था। 'क्या मुसीबत है! मैं उन्हें कहां ढूंढूंगा?, मैं दुःखी होकर आपके महल में आया। मैं आप से मिलना चाहता था। पर दरवाज़े पर खड़े आपके नौकरों ने मुझे किसी भी तरह अंदर नहीं घुसने दिया।"

नौजवान सिर झुकाकर चुप हो गया।

बादशाह ने हैरत में पड़कर अपने मंत्रियों की ओर देखा।

वे खड़े हुए और सिर झुकाकर बोले, "ऐ, बादशाह, इसने जो कुछ कहा है, वह सब झूठ है। ऐसे ही यह अपने मालिक की भेड़ों के लिए भी कहेगा कि वो खो गईं।"

बादशाह चिल्लाया, "मैं तुझसे पूछता हूं, भेड़ें कहां हैं?"

"शहंशाह, मुझे अपनी बात कहने की इजाज़त दीजिए। जब आपके पहरेदारों ने मुझे दरवाज़े में नहीं घुसने दिया, तो मैं बहुत दुःखी होकर अपनी बुढ़िया मां, मुर्गे और दूसरे जूते को ढूंढने निकला। मैं चलते-चलते बहुत दूर पहुंच गया और एक गांव में जा पहुंचा। मैंने लोगों से पूछताछ करके अपने मुर्गे को ढूंढ लिया। वह ज़मींदार की ज़मीन जोत रहा था। हम गले मिले, दुआ-सलाम हुई। छह महीनों में मुर्गे को तनख्वाह में बोरी सीने की एक सूई मिली और उसे भी उसका मालिक अपने पास रखे हुआ था। मैं मालिक से लड़ा और शोर मचाकर उससे सूई छीन ली। 'मेरे साथ चल', मैंने मुर्गे से कहा।

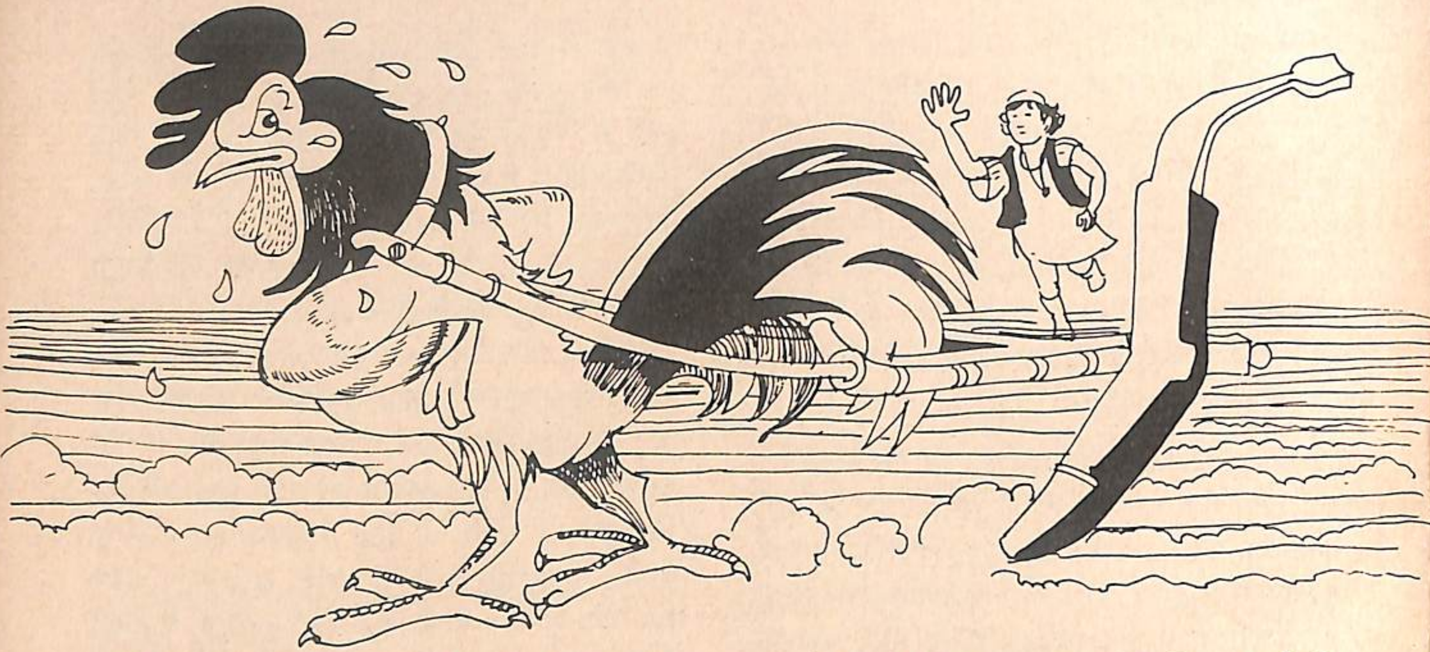

'नहीं', वह बोला, 'मुझे छह महीने नौकरी करनी है; तीन महीने हो चुके हैं, मियाद पूरी होने पर मुझे पैसा मिलेगा और मैं ख़ुद आ जाऊंगा।' मैंने सूई लेकर मुर्गे से विदा ली और घर पहुंचा, पर घर नदारद था, बिल्कुल ग़ायब हो गया था।

मैं बहुत दुःखी हुआ और अपनी बुढ़िया मां और दूसरे जूते को ढूंढने निकल पड़ा। मैंने टीले पर चढ़कर देखा, कोई दिखाई नहीं दिया। पहाड़ी पर चढ़कर देखा, कोई दिखाई नहीं दिया। मैं घाटी में लौट आया। सूई को मैंने ज़मीन में गाड़ दिया और उस पर चढ़कर देखा, तो मेरी बुढ़िया मां सिर-दरिया के घाट पर कपड़े धोती नज़र आई। मैं सूई उठाकर चल पड़ा। मां तक पहुंचने के लिए न जाने मैंने कितने पहाड़ और नदिया पार कीं। मालूम पड़ा, मुझसे बिछुड़ने के बाद वह एक आदमी के घर मैं नौकरी करने लगी थी। 'चलो,' मैंने कहा। 'तनख्वाह के पैसे मिलने तक मैं नहीं जाऊंगी,' वह बोली। 'तीन साल काम करके मैंने तीन महीने खाने लायक पैसा कमाया है। तू जा, मुझे तीन महीने और काम करना है, मैं खुद आ जाऊंगी।' मैंने बिना पल्ले के चोगे का पल्ला कमर में खोंसा और मुड़कर चल दिया। थोड़ी दूर चलने के बाद मैंने देखा, नदी में बाढ़ आई हुई है और पुल बह गया है।

गरमी के दिन थे, मैं प्यास के मारे तड़प रहा था। मैंने पानी पीना चाहा, पर नदी तो जम गई थी। मैंने बर्फ़ तोड़नी चाही, लेकिन पथरीली ज़मीन पर एक भी पत्थर नहीं मिला, इसलिए अपने सिर से ही बर्फ़ तोड़ी। गढ़े में सिर डालकर पानी पिया और आगे चल पड़ा। रास्ते में मुझे सूई की याद आई। मैं किनारे पर लौट आया। देखा, मेरी सूई ग़ायब थी। 'मेरी सूई भी चली गई,' मैं दुःखी होकर मां के पास आया। उसकी नौकरी के आख़िरी तीन महीने ख़त्म हो चुके थे। पर जब उसने तनख्वाह मांगी, तो मालिक चिल्लाया, 'तुझे तनख्वाह भी दूं क्या!' उसने मां को इतने ज़ोर से मारा कि वह वहीं मर गई। 'मेरी ज़िंदगी में कितना दुख है?' मैं परेशान होकर आपके महल में आया। शहंशाह, आपसे मिलने के लिए। पर मुझे दरवाज़े के अंदर कदम नहीं रखने दिया गया।"

यह कहकर नौजवान ने सिर झुका लिया।

बादशाह और ज़्यादा हैरत में पड़कर अपने मंत्रियों की ओर देखने लगा।

मंत्रियों में जो सबसे ज़्यादा बुद्धिमान था, वह खड़ा हुआ और सिर झुकाकर बादशाह से बोला, "बादशाह सलामत, इस पर विश्वास मत कीजिए और इससे भेड़ें तलब कीजिए। यह आवारा झूठ बोलता है। अब यह कहेगा कि इसकी भेड़ें चुरा ली गई हैं।"

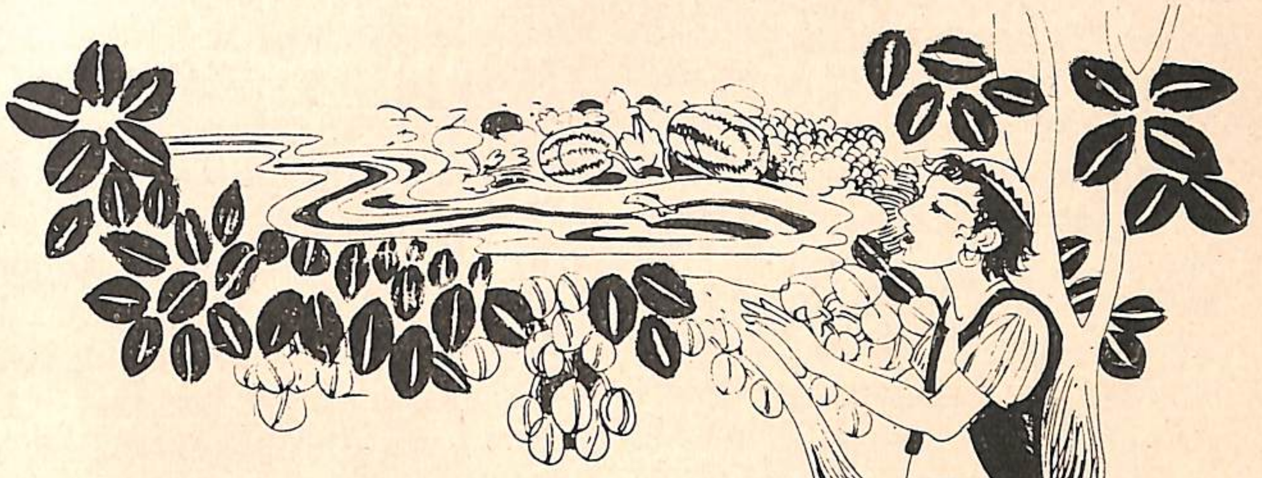

नौजवान तीसरी बार बोला, "ऐ शहंशाह, मुझे बोलने की इजाज़त दीजिए। जब मुझे महल में नहीं घुसने दिया गया तो मैंने उस मालिक के पास जाकर हल्ला मचाने की सोची, जिसने मेरी बूढ़ी मां को मार डाला था। बुढ़िया की तनख़्वाह मुझे दे, उसके ख़ून के बदले में रुपया दे,' मैं उस पर चिल्लाया। मालिक का गरेबान पकड़कर मैं उसे बाहर घसीट लाया। लोग इकट्ठे हो गए और उन्होंने फैसला मेरे हक़ में किया। मालिक ने मुझे एक गधा दिया। मैं गधे पर बैठकर घर चल दिया। चलता रहा, चलता रहा, रास्ते में मुझे चालीस कारवां दिखाई दिए। कारवां के सरदार ने मुझे

आवाज़ दी, 'ऐ, सुन, तेरे गधे की पीठ पर से काठी सरक गई है! उतरकर ज़ीन के नीचे की गद्दी ठीक कर ले।' मैंने उतरकर देखा, गधे की पीठ पर घाव हो गया था, 'अरे सुनना, इसकी क्या दवा करूं?' मैंने उससे पूछा। कारवां के सरदार ने जवाब दिया, 'यह अखरोट ले और इसे जलाकर, इसकी राख घाव पर लगा दे, ठीक हो जाएगा।' मैंने अखरोट जलाकर राख गधे के घाव पर बुरक दी। जैसे ही मैने ज़ीन के नीचे की गद्दी ठीक करनी चाही, मुझे घाव में से अखरोट का पेड़ उगता हुआ दिखाई दिया। पलक झपकते पेड़ बड़ा हो गया और उसमें फूल आ गए। थोड़ी देर बाद देखा, अखरोट पक भी गए। 'क्या करूं?' मैंने सोचा। अगर मैंने पेड़ पर चढ़कर उसे हिलाया, तो गधे की कमर टूट जाएगी, बेहतर यही रहेगा कि अखरोट पत्थर मारकर ही तोड़ूं।' मैं गधे को खेत में ले आया, जहां पत्थर नहीं थे। मैंने आस्तीनें ऊंची करके अखरोट के पेड़ पर पत्थर मारने शुरू किए। न तो कोई पत्थर ही वापस गिरा और न ही कोई अखरोट ज़मीन पर गिरा। मैं पत्थर फेंकता रहा, पूरी ताक़त लगाकर फेंकता रहा। देखा, पत्थर भी ख़त्म हो गए। अब कोई चारा नहीं रहा, मैं खुद ही चढ़ता हूं! मैंने फ़ैसला किया। अखरोट के पेड़ पर चढ़ा तो वहां खरबूजों और तरबूजों का खेत दिखाई दिया और उसके एक किनारे पर नहर में पानी कलकल करता बहता नज़र आया। 'यह तरबूज बोने के लिए सबसे अच्छी जगह है,' मैंने सोचा और तरबूज के बीज बो दिए। और पलक झपकते तरबूज पक गए। वे इतने बड़े थे कि दोनों हाथों में नहीं समा रहे थे। मैंने नहर के किनारे बैठकर जैसे ही तरबूज में चाकू की नोक घुसेड़ी तरबूज कट गया और चाकू तरबूज के अंदर गिर गया। मैंने झुककर उसे निकालना चाहा, पर मैं ख़ुद भी उसके अंदर गिर पड़ा। अंदर चाकू ढूंढ़ता रहा। एक आदमी मिला, मैंने उससे पूछा, 'भाई आपने मेरा चाकू तो नहीं देखा?' 'आप बस [illegible] ही खोज रहे हैं?' आदमी ने पूछा। 'हमारे चालीस कारवां थे और हर कारवां में चालीस ऊंट थे। हम सब बिछुड़ गए, मैं किसी को भी नहीं ढूंढ पाया।'

नौजवान ने यह कहकर सिर झुका लिया।

बादशाह सोच में पड़ गया। मंत्रियों में से एक खड़ा हुआ और सिर झुकाकर बोला,

'शहंशाह, आप इस को दो मोहरें देकर यहां से भगा दीजिए।'

पर बादशाह की बेटी ने सारी बात सुन ली थी। वह अपने पिता से बोली, "इसने मेरी तीनों शर्तें पूरी कर दीं। मैं शादी इसके साथ ही करूंगी।"

बादशाह ने अपनी बेटी की शादी नौजवान के साथ कर दी।

❑❑❑

माथापच्ची- हल : अगस्त 93 अंक के

1. ऐसी स्थिति फिर अगले रविवार (छठवें दिन) रात 10 [illegible] बजे आएगी।
2. कम-से-कम चार रंगों की ज़रूरत पड़ेगी।
4. दोनों घुड़सवार एक-दूसरे के घोड़ों पर बैठकर दौड़ लगाएंगे।
5. रसूल ने 16 सप्ताह के लिए 496 कि.ग्रा. चारा खरीदा था जो 32 सप्ताह तक चला।

वर्ग पहेली 26 : हल

1 च	रे	2 म	■	3 प	■	4 आ	को	5 श
ट	■	6 ज़	मी	र	■	प	■	ब
7 प	ना	ह	■	■	8 म	स	ल	न
टा	■	9 ब	ट	10 न	■	में	■	म
■	11 घु	न	■	ती	■	12 बै	ल	■
13 व	■	ही	■	14 जा	गी	र	■	15 क
16 सु	हा	सि	नी	■	■	17 र	प	ट
न्य	■	खा	■	18 प	र	ख	■	ख
19 रा	य	ता	■	थ	■	20 ना	च	ना

वर्ग पहेली- 26 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठकों के नाम हैं: भारती साहू, इंदागांव **(रायपुर)**। आर.के. पुरी, डी.आर. गुप्त, मनेंद्रगढ़; विश्वदीपक त्रिपाठी, महोरा **(सरगुजा)**। शैलेश श्रीवास्तव, डुमरांव **(बस्तर)**। रवींद्र भटोरे, पिपराटा; शैलेन्द्र सोनवानी, चंदनपुरी, कसरावद। प्रशांत भावसार, खरगोन **(खरगोन)**। **सभी म.प्र.**। सिलेमान, **लखनऊ**; शुभांशु जोशी, डाक पत्थर, **देहरादून**। **सभी उ.प्र.**। इन सभी को तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।

खेल पहेली

यह आकृति सात टुकड़ों से मिलकर बनी है। यहां दी गई अन्य आकृतियां भी इन्हीं टुकड़ों से मिलकर बनी हैं। हर आकृति में सातों टुकड़ों का उपयोग हुआ है।

ये सात टुकड़े गत्ते से बनाए जा सकते हैं। एक मोटा गत्ता लो। उस पर एक बड़ा वर्ग बनाओ। वर्ग को 16 बराबर हिस्सों में बांट दो! हर हिस्सा भी एक वर्ग होगा। अब वर्ग पर चित्र में दिखाए अनुसार रेखाएं खींच लो। इन रेखाओं पर से गत्ते को टुकड़ों में काट लो। टुकड़ों पर रंगीन कागज़ चिपकाकर सुंदर बना सकते हो। बस इन्हीं टुकड़ों को आपस में मिलाकर रखने पर आकृतियां बनेंगी। तुम भी बना देखो। (हल अगले अंक में)

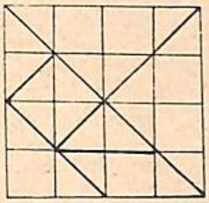

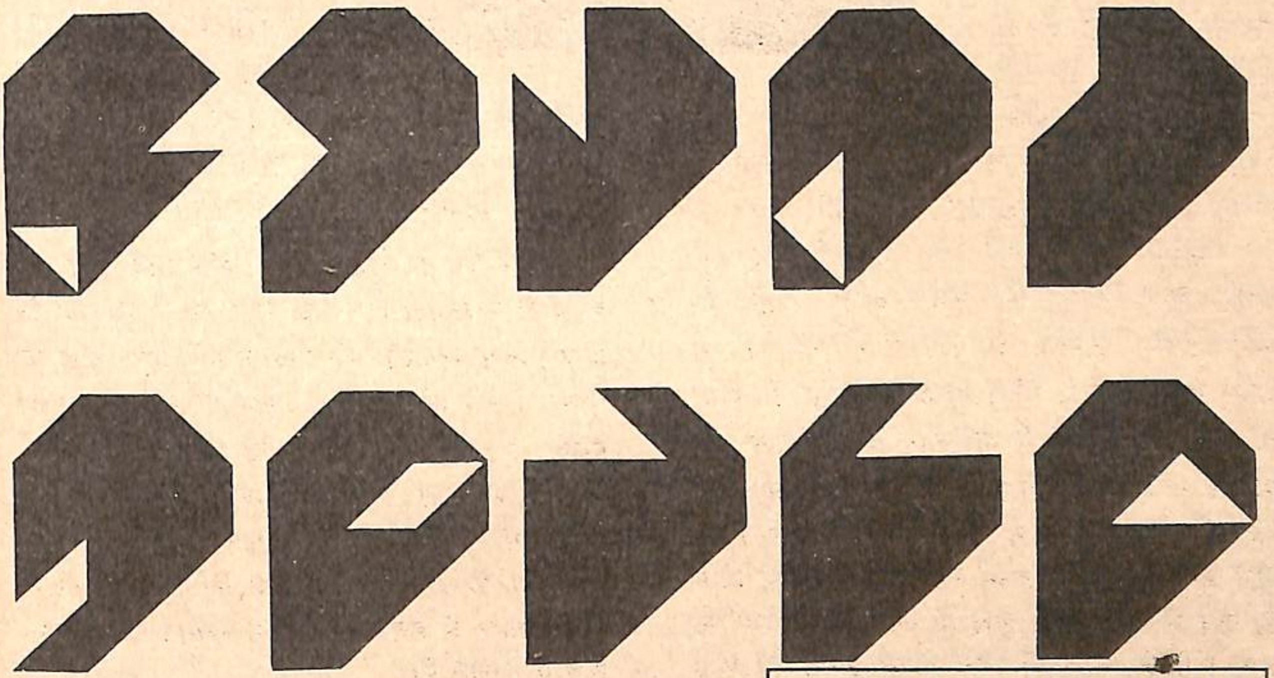

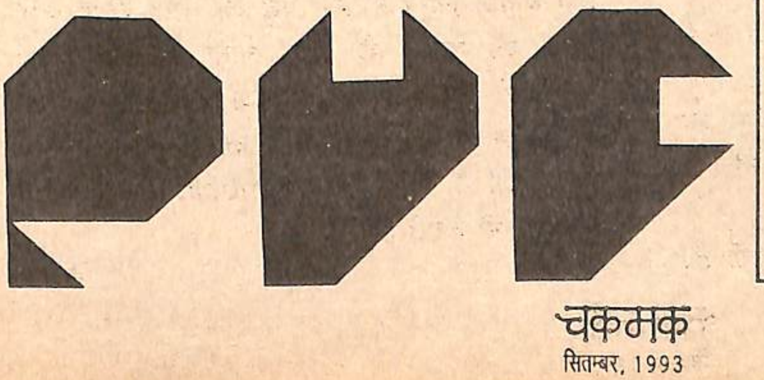

हल अगस्त 93 अंक के

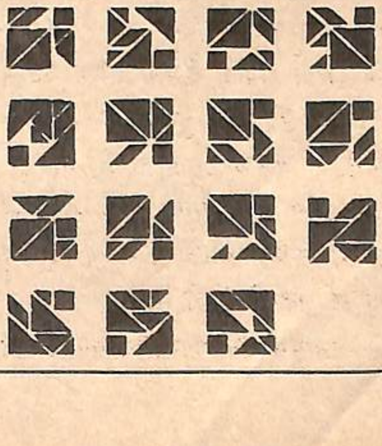

जामुन

बारिश आते ही जामुन के पेड़ फलों से लद जाते हैं। खट्टी-मीठी जामुन खाने को हर किसी का मन करता है। तुम सबने भी खूब खाई होंगी। जामुन का पेड़ भारत में सभी जगह मिलता है, यह यहां का देशी फल है। जामुन का पेड़ लगभग सारे साल हरा रहता है। लंबा, बड़ा यह पेड़ आमतौर पर नदी के किनारे ज़्यादा देखा जा सकता है। भारत के बाहर थाईलैंड, फिलिपिंस, मेडागास्कर और श्रीलंका में भी यह पेड़ पाया जाता है। भारत के उत्तर, दक्षिण और पश्चिम में इसकी अलग-अलग कई जातियां मिलती हैं।

जामुन की पत्तियां हरी, गोलाई लिए हुए, लंबी और आगे से नोक वाली होती हैं। अलग-अलग जातियों के पेड़ों में पत्तियों का रंग थोड़ा गहरा हरा या थोड़ा हल्का हरा होता है। फ़र्क तो फल में भी होता है यह आगे देखेंगे। जामुन के पेड़ में मार्च से मई तक का समय फूल आने का होता है। फूल गुच्छों में खिलते हैं। ये फूल हल्के पीले रंग के होते हैं इनमें हल्की-सी गंध भी होती है। जून से फल आना शुरू हो जाते हैं और बारिश शुरू होने के साथ ही फल पकने लगते हैं। फल छोटे और लंबाई लिए हुए गोल होते हैं। इनका रंग पहले हरा, फिर बैंगनी और पकने के बाद काला हो जाता है। पका हुआ फल मुलायम, रसीला और देखने में चमकीला होता है। अच्छा पका हुआ फल मीठा और कम पके फल में कसैलापन होता है। फल में ऊपर पतला छिलका फिर गूदा और बीच मैं बड़ी से गुठली होती है।

जामुन की आमतौर पर दो क़िस्में मिलती हैं। एक बड़ा फल वाला, जिसमें गुठली छोटी और गूदा अधिक होता है। दूसरी क़िस्म का फल छोटा होता है, इसमें गुठली बड़ी होती है। इस क़िस्म के फलों के स्वाद में कसैलापन होता है। दोनों क़िस्म के पेड़ बीज या कलम लगाकर तैयार किए जा सकते हैं।

यूं तो जामुन के पेड़ कहीं भी बहुत आसानी से लग जाते हैं। लेकिन सूखा और ठंडा वातावरण नए पेड़ लगाने के लिए अच्छा होता है। जामुन के पेड़ में फल की अच्छी पैदावार के लिए भी सूखा वातावरण ज़्यादा अच्छा होता है।

इस पेड़ की लकड़ी सख्त और टिकाऊ होती है। पानी में ज़्यादा दिन तक टिक सकने के गुण के कारण इस लकड़ी को नाव बनाने और कुएं के भीतरी हिस्से को बांधने के काम में लाया जाता है। इसके अलावा जामुन के पेड़ पर टसर (पीले मटमैले रंग का रेशम) के कीड़े पाले जाते हैं। बिहार में भागलपुर तथा बंगाल में बांकुड़ा और पुरुलिया के इलाकों में तैयार किया गया 'टसर' ख़ूब मशहूर है इन्हीं इलाकों में जामुन के पेड़ भी ख़ूब पाए जाते हैं।

जामुन से एक तरह का सिरका और पाचन चूर्ण बनाया जाता है। इस पेड़ की छाल रंगाई और चमड़े की कमाई के काम आती है। जामुन की गुठली से कई तरह की दवाईयां बनती हैं। गोवा में तो जामुन से एक विशेष तरह का रंग बनाया जाता है। अंग्रेज़ी में जामुन को (Jambolan या Black plum) भी कहते हैं।

सवालीराम

■ बुखार में शरीर गर्म क्यों हो जाता है? क्या बुखार के लिए दवा लेनी चाहिए?

□ रेखा शिवराज, ममता श्रीवास्तव, इटारसी

□ आमतौर पर दिन भर में हमारे शरीर का तापमान सामान्य से 1° या 2° से ज़्यादा इधर-उधर नहीं होता। मुंह के अंदर का तापमान 99° फैरेन्हाइट से ऊपर तो जाता ही नहीं ! हां, दिन भर में तापमान का एक हल्का-सा उतार-चढ़ाव ज़रूर दिखता है - दोपहर के आख़िरी घंटों में यह थोड़ा ज़्यादा रहता है और अलस्सुबह कुछ कम।

पहले यह देखें कि यह तापमान पैदा कहां से होता है। शरीर का तापमान, शरीर द्वारा उत्पन्न उष्मा (गर्मी) और शरीर द्वारा खोई या इस्तेमाल करके ख़त्म की जाने वाली उष्मा के संतुलन से तय होता है। मानव शरीर का हर एक अंग कुछ उष्मा पैदा करता है। यहां तक कि सांस लेने पर जो रासायनिक क्रिया होती है उससे भी उष्मा पैदा होती है। यह उष्मा कई अलग-अलग तरीक़ों से ख़र्च होती है या शरीर द्वारा खो दी जाती है। जैसे, पसीने के सूखने (वाष्पन) से।

हमारे मस्तिष्क की एक ग्रंथी और हमारा केंद्रीय तंत्रिका तंत्र यह तय करते हैं कि शरीर के कौन-से अंग कितनी ऊष्मा पैदा करेंगे और किस तरीक़े से कितनी उष्मा ख़र्च होगी या खो दी जाएगी। पैदा होने और ख़र्च होने के इस सिलसिले में जितनी उष्मा बचती है, वही शरीर का तापमान निश्चित करती है। यह निश्चित तापमान एक केंद्र बिंदु के इर्द-गिर्द मंडराता रहता है, जिसे हम ताप-नियंत्रक बिंदु कहते हैं।

पर बुखार होने पर यह सारी व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। दिन भर में व्यक्ति के शरीर का तापमान 5° से 9° तक घट-बढ़ सकता है और अधिकतम तापमान 106° फैरेन्हाइट तक छू जाता है। शरीर के तापमान में यह अस्वाभाविक बढ़ोत्तरी अक़सर किसी संक्रमण या बड़े पैमाने पर कोशिकाओं के मर जाने या ख़राब हो जाने का संकेत होती है।

शरीर में संक्रमण होने पर बैक्टीरिया या वायरस से और कोशिकाओं के मरने या ख़राब हो जाने पर इन बेकार मरी हुई कोशिकाओं से एक प्रोटीन और शर्करा (शक्कर) युक्त पदार्थ निकलता है। इसे पायरोजेन कहते हैं। हमारे ख़ून की सफ़ेद कोशिकाओं में भी ये पायरोजेन पाए जाते हैं। ये खून के साथ बहकर मस्तिष्क तक पहुंच जाते हैं। यहां ये ताप-नियंत्रक बिंदु को ऊपर की ओर सरका देते हैं। यानि वह तापमान जिसके आसपास शरीर का सामान्य तापमान रहता है, कुछ ऊंचा हो जाता है। तब मस्तिष्क के नियंत्रण में उष्मा पैदा करने वाली और ख़र्च करने वाली सारी प्रक्रियाओं में खलबली मच जाती है। उष्मा का पैदा होना और ख़र्च होना फिर भी नियंत्रित रहता है। पर अब एक ऊपर चढ़े हुए ताप-नियंत्रक बिंदु पर। तापमान अब इस नए बिंदु के इर्द-गिर्द घटता-बढ़ता रहता है। बुखार में तापमान का बढ़ना इसी प्रक्रिया से होता होगा, ऐसा सिर्फ़ माना जाता है। अभी तक इसके कोई ठोस प्रमाण नहीं मिले हैं।

अब रही इलाज की बात। बुखार किसी संक्रमण या बीमारी का लक्षण हो सकता है परंतु हमेशा ही ऐसा हो, यह ज़रूरी नहीं।

यह साफ़ नहीं है कि बुखार मानव शरीर का रोग से बचने या लड़ने का ही एक तरीक़ा है या रोग या संक्रमण होने की एक प्रतिक्रिया। बहरहाल, डॉक्टर और जानकार लोगों की यही सलाह है कि बुखार होने पर शरीर के बढ़े हुए तापमान को स्वाभाविक तापमान पर लाने के लिए या तो ठंडी पट्टी की मदद लेनी चाहिए या डॉक्टर की राय से दवा लेनी चाहिए। इन तरीकों से तापमान कम करने पर मरीज़ को आराम ही होगा। □

माथापच्ची

(1)

एक बर्तन में शहद भरा है। शहद सहित बर्तन का भार है 500 ग्राम। उसी बर्तन में अगर मिट्टी का तेल भर दें तो तेल सहित बर्तन का भार 300ग्राम आता है।

अगर शहद, मिट्टी के तेल से दो गुना भारी है, तो बताओ बर्तन का भार कितना होगा?

(2)

एक सीधी सड़क पर दो आदमी आठ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से एक दूसरे की तरफ दौड़ रहे हैं। दौड़ की शुरूआत में दोनों के बीच 16 किलोमीटर का फासला था। 65 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से उड़ती हुई एक मक्खी पहले आदमी के पास से उड़ती हुई दूसरे आदमी के पास पहुंच कर वापस मुड़ती है। और फिर पहले आदमी के पास पहुंचती है। उसके पास पहुंचने के बाद मक्खी मुड़कर दूसरे आदमी के पास जाती है। यह क्रम इसी प्रकार चलता रहता है। तुम यह बताओ कि जब दोनों आदमी एक-दूसरे के पास पहुंचेंगे तो उस समय तक मक्खी कितना फासला तय कर चुकी होगी?

स	भा	लू	स	प	ल	ना
शी	ष	हा	भी	भे	ख	रा
हि	थी	कु	ड़	ता	र	सि
र	णी	ब	शे	ची	गो	या
ण	घा	सु	अ	र	श	र
लो	म	ड़ी	वे	गे	ल	व
रा	स	प	थ	डा	गें	म

इस जाली में दस जानवरों के नाम हैं। ढूंढो तो ज़रा।

▫ योगेंद्र कुमार काछी, छठवीं
पाली,बिलासपुर,म.प्र.

(3)

निशानेबाज़ी की प्रतियोगिता चल रही थी। लक्ष्य के चारों ओर अलग-अलग रंग के घेरे बने थे। **क** क्षेत्र में निशाना लगाने पर 16 अंक मिलते थे, **ख** क्षेत्र में 8 अंक, **ग** में 4 और **घ** में 2। मीनू इस प्रतियोगिता में पहले नंबर पर आई और पांच बार निशाना लगाने पर उसे कुल 46 अंक मिले। यह बताओ कि उसके पांच निशाने किस-किस क्षेत्र में लगे थे?

(4)

एक बार शशी के घर हम बीस लोग पहुंचे। उसने हम सबको बीस आम बांटे। प्रत्येक पुरूष को दो आम और प्रत्येक महिला को तीन आम और बच्चों को आधा-आधा आम दिया।

तुम्हें बूझना यह है कि हममें कुल कितने पुरूष थे, कितनी महिलाएं और कितने बच्चे?

(5)

एक मोहल्ले में दो लड़के मानू और सोनू रहते हैं। उनके घर आजू-बाजू में हैं। मानू सोनू से बड़ा है दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। मानू को स्कूल तक पहुंचने में बीस मिनट लगते हैं और सोनू को तीस मिनट।

अगर सोनू, मानू से पांच मिनट पहले घर से निकलता है तो मानू कितनी देर में सोनू के पास पहुंचेगा।

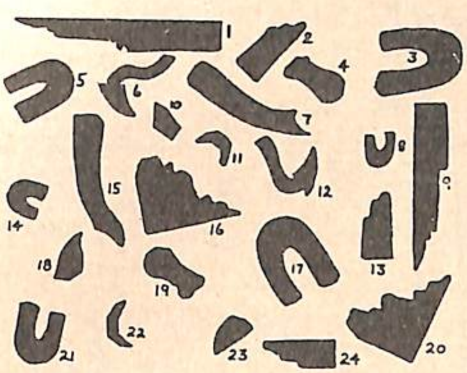

(6)

पहले नीचे के चित्र को देखो। अब बाईं ओर दिए टुकड़ों में से वो टुकड़े छांटो जिनसे नीचे जैसा ही चित्र बन जाए।

(7)

मीनू और राजू को एक बोरी दाल बीनना थी। मीनू यह काम 2 दिन में कर सकती है और राजू 3 दिन में। अगर दोनों मिलकर काम को आपस में ऐसे बांटें कि कम से कम समय में काम हो जाए तो कितना समय लगेगा?

वर्ग पहेली - 29

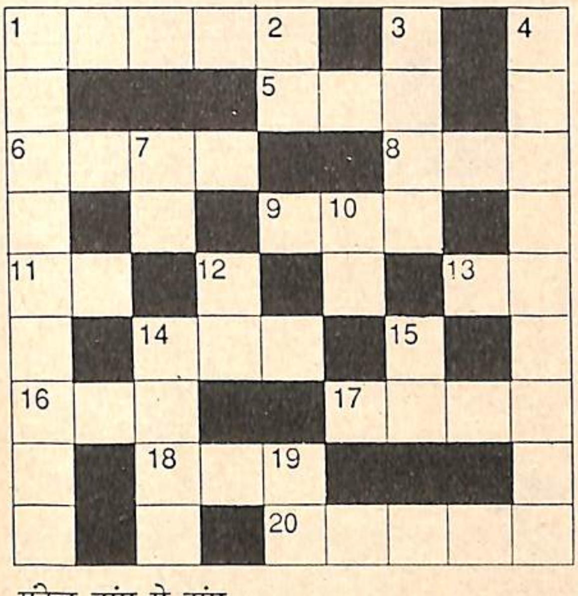

संकेत बांए से दांए

1. हर ख़ास-ओ-आम व्यक्ति के लिए (5)
5. मदन में दबाना (3)
6. थोड़ी देर शांत रहने में, नक़्शे पर पाई जाने वाली एक तरह की रेखाएं (4)
8. चाहे जितनी खालो पेट नहीं भरेगा (3)
9. बुनकर (3)
11. जौ के आकार का दाना (2)
13. आनाकानी में तुम्हारे पिता की सास (2)
14. अरे कला, तू नीम क्यों चढ़ी? में एक फल (3)
16. आम पर बौर छा रहे हैं, पर है तो बारिश (3)
17. एक तरह का बुखार (4)
18. 'बल के तल' की गड़बड़ी में इच्छा (3)
20. महकना (5)

संकेत: ऊपर से नीचे

1. कबीर के एक दोहे की पहली पंक्ति जिसमें दुनिया के पगलाने का ज़िक्र है (2,2,2,3)
2. अदरक में ऊंचाई (2)
3. जो कहा न गया हो (4)
4. एक मुहावरा जिसमें मन ललचाए (2,1,2,2,2)
7. अंधकार (2)
10. बौद्ध भिक्षुओं की एक उपाधि (2)
12. आधी परेशानी में दूर (2)
14. बरकत में गड़बड़ी से तमाशा हो जाए (4)
15. शिकार के लिए उपयोग किया जाने वाला एक हथियार (2)
19. जिसके फूटने पर आवाज़ होती है (2)

● सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन-माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-29 का हल दिसंबर अंक में देखें।

बिंदु
• साहू
तुम खड़ी खड़ी क्या सोच रही हो?
मैं इस गठरी के साथ एक प्रयोग कर रही हूं और किसी सहयोगी की तलाश में ताकि मेरी सफलता का आधा श्रेय उसे भी जाए।
क्या तुम मुझे अपना सहयोगी पसंद करोगी।
जरूर। तो अब प्रयोग प्रारंभ करते हैं
अपने सिर पर यह गठरी उठा लो, फिर धीरे धीरे चलो। थक जाओ तो गठरी नीचे रख दो।
मैं तुम्हारे कदमों की संख्या गिनती हूं। एक.. दो... तीन.. चार...
बस, यहीं रुक जाओ। मैं अपने प्रयोग में पूरी तरह सफल हूं और इसका आधा श्रेय तुमको जाता है। धन्यवाद!
आखिर तुम्हारा वह प्रयोग क्या था?
इस भारी गठरी को बिना पारिश्रमिक के मैं अपने घर तक लाना चाहती थी, जबकि मैं बहुत थक चुकी थी।

मनुष्य महाबली कैसे बना!

हमारे पुरखे धरती पर उतरे

हमारे प्रागैतिहासिक पूर्वजों के लिए जंगल में घूमना-फिरना अब अधिक मुश्किल होता जा रहा था, क्योंकि अब तक वह कम घना हो गया था और उसके निवासी यदि अब पेड़ों के एक झुंड से दूसरे झुंड पर जाना चाहते, तो उन्हें ज़मीन पर होकर जाना पड़ता था। वृक्षवासी के लिए यह कोई आसान बात न थी, क्योंकि उसके लिए ज़मीन पर किसी अधिक तेज़ हिंसक जंतु का शिकार हो जाना एकदम संभव था।

लेकिन वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। भूख ने उन्हें पेड़ों पर से उतरने और भोजन की तलाश में भटकने के लिए मजबूर कर दिया था।

अपने परिचित पिंजरे यानी जंगल की जिस दुनिया के लिए वे अनुकूलित थे, उसे छोड़ने का क्या मतलब था?

इसका मतलब यह था कि उन्होंने जंगल के कानूनों को तोड़ दिया, उन्होंने उन ज़ंजीरों को तोड़ दिया, जो हर जंतु को प्रकृति में उसकी अपनी जगह पर बांधती हैं।

हम जानते हैं कि पशु और पक्षी बदलते हैं। प्रकृति में अपरिवर्तनीय कुछ भी नहीं है। लेकिन यह कोई आसान काम नहीं है। मज़बूत पंजों वाले एक छोटे-से वन्य पशु को हमारा आज का जाना-पहचाना घोड़ा बनने में लाखों साल लग गए। हर बाल-पशु बहुत-कुछ अपने माता-पिता जैसा ही होता है। मुश्किल से ही कोई फ़र्क होता है। एक नई नस्ल के विकसित होने में (ऐसी नस्ल, जो पहले की नस्ल से एकदम भिन्न थी) हज़ारों पीढ़ियां खप गईं।

और हमारे प्रागैतिहासिक पूर्वज ?

अगर वे अपनी आदतें और तरीक़े न बदल पाते, तो उन्हें वानरों की तरह ज़रूर मुश्किल होती। लेकिन वे वानरों से भिन्न थे, क्योंकि अब वे पत्थर और लकड़ी के बने औज़ारों की सहायता से भोजन प्राप्त करना सीख गए थे। उन्हें इस बात से परेशानी नहीं हुई कि जंगल कम घने होते जा रहे थे, क्योंकि वे ज़मीन पर चलना सीख ही चुके थे और खुली, वृक्षहीन जगहों से डरते न थे। और अगर कोई दुश्मन उनके रास्ते में आ जाता, तो कपि–मानवों (प्रागैतिहासिक मानव को दिया गया नाम) का झुंड डंडों और पत्थरों से अपनी रक्षा करता।

और हमारे दूर के संबंधियों - वानरों - का क्या हुआ?

वे वनों के साथ पीछे हटते गए और सदा के लिए वनवासी बने

रहे। असल में इस मामले में उनके सामने कोई चारा न था। वे विकास में कपि-मानवों के पीछे रहे थे और उन्होंने औज़ारों का उपयोग नहीं सीखा था। इसके बजाय उनमें जो सबसे ज़्यादा फुर्तीले थे, उन्होंने डालों पर चढ़ना और उनसे कूदना पहले से भी ज़्यादा अच्छी तरह सीख लिया। जो चढ़ने में कम निपुण थे और अपने को पेड़ों की फुनगियों के जीवन के लिए आसानी से अनुकूलित न कर सके, उनमें से केवल सबसे बड़े और शक्तिशाली वानर ही बच पाए। लेकिन वानर जितना भारी और बड़ा होता था, पेड़ों का जीवन उसे उतना ही मुश्किल लगता था। इसलिए इन बड़े वानरों को पेड़ों पर से ज़मीन पर आने के लिए मजबूर होना पड़ा। गोरिल्ला अभी तक जंगल की सबसे निचली मंज़िल पर ही रहता है। उसके हथियार न डंडे हैं और न पत्थर, बल्कि उसके शक्तिशाली जबड़ों से निकलनेवाले बड़े-बड़े दांत ही हैं।

इस प्रकार आदिम-मानव और उसके दूर के संबंधी सदा-सदा के लिए अलग हो गए।

संसार में सभी जंतु और पौधे पोषण चक्रों द्वारा जुड़े हुए हैं। जंगल में चूहे बीज को खाते हैं, जबकि सांप चूहों को खा जाते हैं। इस तरह हमारे सामने एक श्रृंखला आ जाती है : बीज-चूहे- सांप। लेकिन चूहे केवल बीज नहीं खाते। वे अन्य फल आदि भी खाते हैं। और चूहों का शिकार करने वाला जंतु सांप अकेला नहीं है। चूहों का शिकार करने वाले अन्य जानवर और पक्षी भी हैं- जैसे बाज़। इस तरह हमें एक श्रृंखला और मिल जाती है : बीज- चूहे- सांप- बाज़। जंगल के सभी निवासी इन श्रृंखलाओं की कड़ियां हैं।

मानव भी जंगल की अपनी दुनिया में एक पोषण चक्र की एक कड़ी था। वह फल आदि खाता था, जबकि शेर उसे खा जाता था।

तभी अचानक मानव ने इन श्रृंखलाओं को तोड़ना शुरू कर दिया। वह उन चीज़ों को खाने लगा, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं खाया था। उसने शेर और उन अन्य जंगली जानवरों का शिकार बनने से इंकार कर दिया, जो लाखों वर्षों से उसके पूर्वजों को मारते चले आ रहे थे।

वास्तव में मनुष्य का यह साहस उसके हाथों से आया। अपने हाथ में उसने जो पत्थर ले रखा था और जिस डंडे को वह जड़ों को खोदने में इस्तेमाल करता था, वे उसके हथियार थे। मनुष्य के पहले औज़ार उसके पहले हथियार बन गए।

ज़िंदा औज़ार

तुमने शायद पक्षियों, पशुओं और कीड़े-मकोड़ों की निर्माण-योग्यताओं के बारे में पढ़ा या सुना हो। हमें उनमें निपुण बढ़ई, राजमिस्त्री, बुनकर और दरज़ी तक होने की बात मालूम है। बीवर

(ऊदबिलाव जैसा एक जानवर) के तेज़ दांत बिल्कुल लकड़हारे की तरह पेड़ को गिरा सकते हैं। इसके बाद बीवर गिरे हुए तनों और डालियों का उपयोग करके सचमुच के बांध बना देते हैं। इन बांधों के कारण नदी अपने किनारों के बाहर निकल आती है और बीवरों के मनपसंद ठहरे पानी का तालाब बना देती है।

और जंगल की सामान्य भूरी चींटियां जो चीड़ की सूखी पत्तियों से अपनी बांबियां बनाती हैं? अगर हम किसी बांबी को डंडे से उखाड़ें, तो हम देखेंगे कि वह कितनी चतुरता से बनाया गया कई मंज़िला मकान है।

सवाल उठता है- क्या कभी वह दिन भी आएगा जब चींटियां और बीवर मनुष्य की बराबरी कर सकें? क्या अब से दस लाख साल बाद चींटियों के अपने चींटिया-अखबार होंगे, वे अपने चींटिया-कारखानों में काम करेगीं, अपने चींटिया हवाई जहाज़ों में उड़ेंगी और रेडियो पर चींटिया-संगीत सुनेंगी? निस्संदेह नहीं। और यह सब इसलिए कि मनुष्य और चींटियों में एक बहुत महत्वपूर्ण अंतर है।

वह अंतर क्या है?

सोचो कि मनुष्य किस तरह काम करता है। वह केवल अपने हाथों या अपने दांतों का उपयोग नहीं करता। वह कुल्हाड़ी, बेलचे या हथौड़े का इस्तेमाल करता है। लेकिन चींटियों की बांबी में तुम्हें चींटिया कुल्हाड़ी या चींटिया-हथौड़ी नहीं मिलेगी।

जब चींटी किसी चीज़ को दो टुकड़ों में काटना चाहती है, तो वह उन ज़िंदा कतरनियों का उपयोग करती है, जो उसके सिर का अंग होती हैं। जब उसे खाई खोदनी होती है, तो वह उन चार ज़िंदा बेलचों का इस्तेमाल करती है, जिन्हें वह सदा साथ रखती है। ये बेलचे उसकी छः में से चार टांगें हैं। अगली दो खुदाई करती हैं, पिछली दो मिट्टी को अलग उलीचती हैं, जबकि बीच की दो टांगों पर वह काम करते समय टिकती है।

ये चींटी के "ज़िंदा" औज़ार हैं। वे हमारे औज़ारों की तरह कृत्रिम नहीं हैं, बल्कि प्राकृतिक औज़ार हैं, जिनसे वह कभी अलग नहीं हो सकती।

बीवरों के औज़ार भी उसके अंग होते हैं। उसके पास पेड़ को काटने के लिए कुल्हाड़ी नहीं होती। वह अपने दांतों का उपयोग करता है। चींटियां और बीवर अपने औज़ार नहीं बनाते। वे उनके साथ पैदा होते हैं।

पहली नज़र में ऐसे औज़ारों पर ईर्ष्या हो सकती है- जो औज़ार अपना अंग हो, उसे हम कभी खो या रखकर भूल नहीं सकते। लेकिन अगर तुम इस पर विचार करो, तो तुम देखोगे कि ये औज़ार असल में इतने अच्छे नहीं हैं। उन्हें कभी सुधारा या बदला नहीं जा सकता।

बीवर के दांत जब उम्र बढ़ जाने के कारण भोथरे हो जाते हैं, तो वह उन पर धार नहीं चढ़वा सकता। और चींटी ऐसी नई, सुधरी हुई टांग की मांग नहीं कर सकती, जो खुदाई तेज़ी से और गहरी करे।

मान लो कि अन्य सभी जंतुओं की तरह आदमी के भी ज़िंदा औज़ार ही होते और लकड़ी, लोहे या इस्पात के बने कोई औज़ार न होते।

वह न किसी नए औज़ार की ईजाद कर सकता था, न जिस पुराने औज़ार के साथ वह पैदा हुआ था, उसे बदल ही सकता था। और अगर उसे बेलचे की ज़रूरत होती, तो उसे बेलचेनुमा हाथ को लिए-लिए ही पैदा होना पड़ता। हम बेशक इन सब बातों की कल्पना ही कर रहे हैं, क्योंकि ऐसा असल में कभी हो ही नहीं सकता। लेकिन मान लो कि कोई ऐसा विचित्र प्राणी पैदा हो ही जाए।

तो ऐसे प्राणी को ज़िंदगी भर अपना बेलचाई हाथ साथ लिए-लिए घूमना होगा, पर वह किसी भी अन्य प्रकार के काम के लिए उपयोगी न होगा। जब वह प्राणी मरेगा, तो उसके बेलचे का भी अंत हो जाएगा। वह अपनी आगामी पीढ़ियों को अपना बेलचा तभी देकर जा पाएगा जब उसके पोते-परपोते उसके बेलचाई हाथ को वंशानुक्रम में ही ग्रहण करें।

फिर भी, यह पूर्णतः सत्य नहीं है। कोई ज़िंदा औज़ार भावी संतानों का जीवित अंग तभी बनता है, जब वह उनके काम का हो; अगर वह हानिकर हो, तो वह उनका जीवित अंग नहीं बनता।

किसी ज़िंदा और प्राकृतिक औज़ार की उत्पत्ति कितनी ही बातों पर निर्भर होती है। फिर भी मनुष्य अपने विकास में दूसरे ही पथ पर चला। उसने इस बात की प्रतीक्षा नहीं की कि प्रकृति उसे बेलचाई हाथ प्रदान करे। उसने अपने लिए बेलचा खुद बना लिया। और केवल बेलचा ही नहीं, बल्कि छुरा और कुल्हाड़ा और कितने ही अन्य औज़ार भी।

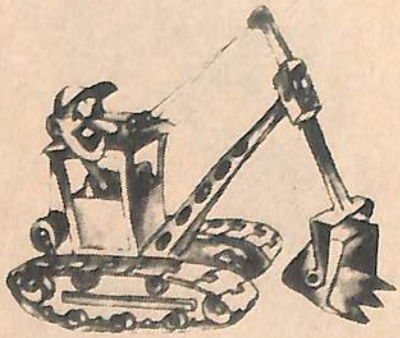

मनुष्य ने अपने पूर्वजों से वंशानुक्रम में जिन दस हाथ की उंगलियों, दस पांव की उंगलियों और बत्तीस दांतों को प्राप्त किया, उनमें उसने हज़ारों ही अत्यंत भिन्न-भिन्न लंबी और छोटी, पतली और मोटी, तेज़ और भोथरी, भुंकनेवाली, काटनेवाली और चोट करने वाली- उंगलियों, दाढ़ों, दांतों, पंजों और मुट्ठियों को और जोड़ लिया है।

और इसने उसे शेष जंतु-जगत के साथ होड़ में इतना तेज़ बना दिया है कि दूसरों के लिए कभी भी उसकी बराबरी कर पाना असंभव हो गया है।

(अगले अंक में जारी)
('मनुष्य महाबली कैसे बना' से साभार)
प्रस्तुति : राजेश उत्साही

सुरभि, तीसरी, हिसार, हरियाणा

हिमांशु संभुस, चौथी, इंदौर, म.प्र.

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/ 431/93

प्रदीप पंकज, दूसरी, लखनऊ, उ.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना